॥ ॐ ॥

"कलौ तु केवला भक्तिः"

शब्द-संग्रह ।

प्रकाशक—

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा

(रेवाड़ी)

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से

पहियागंज-दिल्ली—सद्धर्मप्रचारक प्रेस में छपा ।

५१०० प्रति सं० १९८१ मूल्य प्रेम

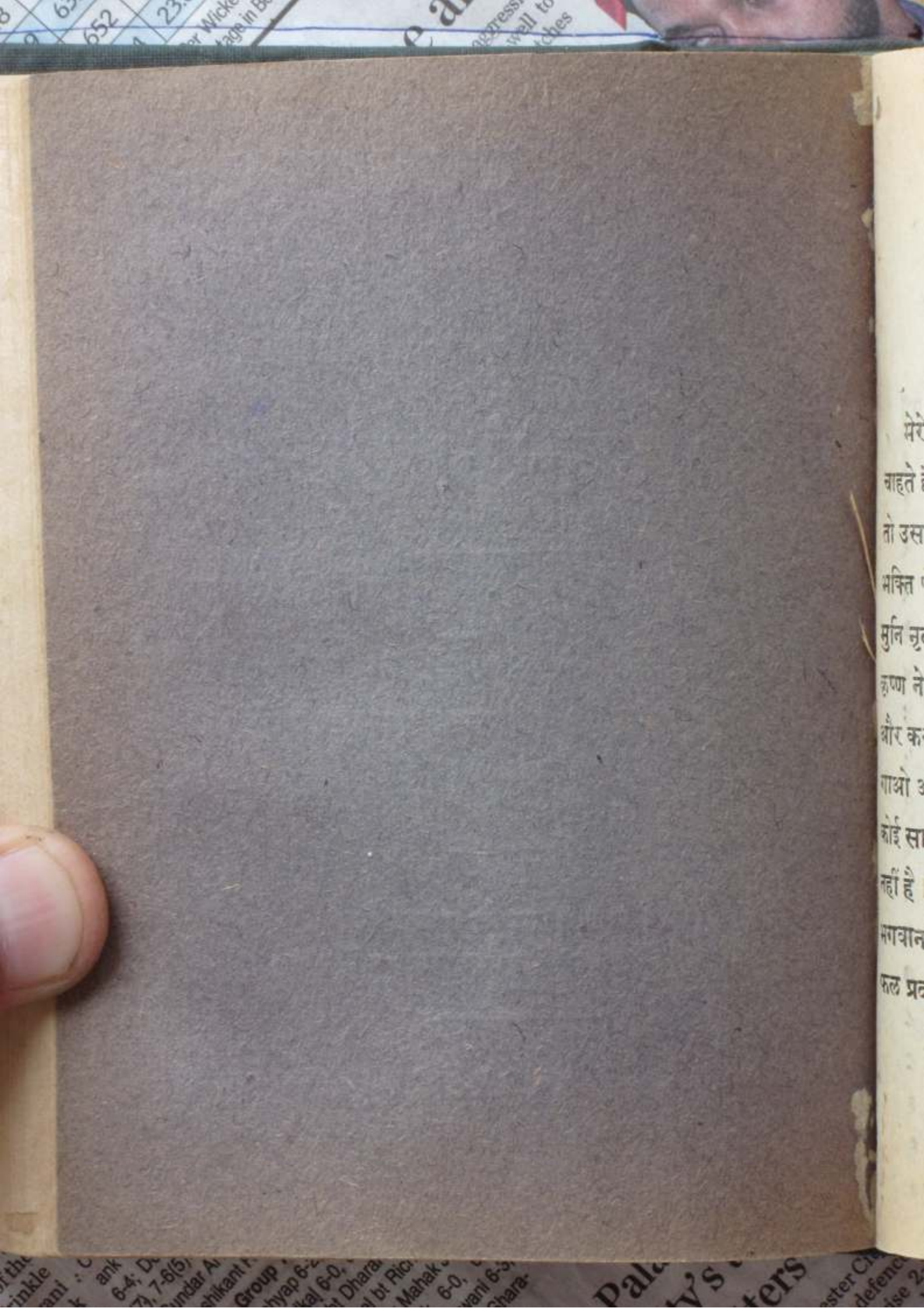

नम्र निवेदन ।

मेरे प्यारे बन्धु वर्ग ! यदि आप स्वयं सुख और शान्ति चाहते हैं और संसार को सुखमय व शान्ति बनाना चाहते हैं; तो उस कल्याणकारिणी भक्ति का आचरण कर संसार में भक्ति फैलाने का प्रयत्न करो । जिस भक्तिमें मग्न होकर ऋषि मुनि नृत्य करते थे, जिस भक्ति के बल से भगवान राम और कृष्ण ने संसार को स्वर्ग बना दिया था उसका रस पान करने और कराने के लिये उन ऋषि, मुनि महात्माओं के बनाए गीत गाओ और उन गीतों को फैलाओ । मोक्षमें भक्ति से बढ़कर कोई साधन नहीं है और उपासना में गानेसे बढ़कर कोई तरीका नहीं है । देश के नर नारी और बालक यदि प्रेम में मग्न होकर भगवान के गीत गावेंगे तो भगवान अवश्यमेव मनवांछित फल प्रदान करेंगे ।

भक्तों का दास—दलीप बनस्थी

श्री भगवद्भक्ति आश्रम

रामपुरा पो० रेवाड़ी (दिल्ली)

सूचो भजनावली ।

नाम शब्द	नं० शब्द	पृष्ठ
ओ३म् निरंजन	१	१
हरि नारायण	२	२
दीनानाथ दयानिधि	३	२
हमारे प्रभु एक तुमही ओंकार	४	३
महरम हो साईं जाने	५	३
मेरे सारे दुःख विसर गये	६	४
मेरा मन बानिया रे	७	४
वा घर कभी न जाना जी	८	५
बीरा मन समझियो रे	९	५
घायल ना जीवे	१०	६
गली तो चारों बन्द पड़ी	११	६
आप ही धारम धारी	१२	७
रे मन क्यों भूला मेरा भाई	१३	७
भजन बिन बावरे	१४	८
मन्दिर में काइयों ढूंढती फिरे	१५	८
धागों ना जारे	१६	९
साधू भूला बेड़ा जायो	१७	९
शब्द ही शब्द भयो उजियारो	१८	१०

नाम शब्द	न० शब्द	पृष्ठ
लाडो मेन्डुकी री	१६	११
तन मन धन वाजी लाय रही	२०	११
मेरी सुरत सुहागन	२१	१२
शब्द झड़ लाग्योरी	२२	१२
भजन में होत आनन्द	२३	१२
मोय नीको लागे बाजो	२४	१३
मैं कैसे जाऊंगी	२५	,,
लगन बिन जागे ना	२६	,,
माया हो रंग बादली	२७	१४
अजपा जाप जपो	२८	,,
सुना है हमने निर्बल के	२६	१५
कछु लेना न देना	३०	,,
जन्म तेरो बातां में	३१	,,
तुम देखो सन्तो	३२	१६
मैं तेरा स्वामी	३३	,,
दिवाने प्यारे क्या गावे	३४	१७
गुरू ने मेरे बान मारा	३५	,,
मोको कहां ढूंढे रे	३६	,,
बने जो कुछ धरम	३७	१८
मैं हार गई	३८	१६
नारद मुनि मेरे	३६	,,

नाम शब्द	नं० शब्द	पृष्ठ
हमारे प्रभु अवगुण	४०	२०
चले गये दिल के	४१	२०
लज्जा मेरी राखो	४२	,,
किन तेरो गोविंद	४३	२१
सब दिन होत न एक समान	४४	,,
अंखिया मोहन की	४५	२२
भजो रे मन	४६	,,
तेरा यह खेल अपारा	४७	२३
मेरे ही मन माना है	४८	,,
मन परदेशी हो	४९	२४
तू तो कोई अजब है	५०	,,
हंस चाल वसो	५१	२५
मेरा राम सनेही	५२	,,
घूंघट खोल दे	५३	२६
बादला झुक आया	५३ अ	,,
जिन्होंने मन मार लिया	५४	२७
काम क्रोध मद लोभ मोह ने	५५	,,
सत्य नाम करतारे	५६	२८
बंगला भला बना	५७	,,
मारग में लूटें पांच जनी	५८	२९

नाम शब्द	नं० शब्द	पृष्ठ
तीरथ में माया जाल	५६	३०
सो राणा जो तैं ज़हर	६०	,,
पिया विन सूनो छै	६१	३१
मालिक कुल आलम	६२	,,
अरी एरी उदां	६३	,,
तेरा जन राम रसायन मात.	६४	३२
जगत में झूंठी देखी	६५	,,
एक अनेक व्यापक	६६	,,
नाथ कैसे छोड़े बैठे	६७	३३
सिया रघूवीर भरोसो	६८	३४
ऊधो करमन की गति	६९	,,
बन आये की बात रे	७०	३५
जगदीश्वर तुम्हारा	७० अ०	३६
मैं वारी जाऊं सत्गुर	७१	,,
क्यों सोया ग़फलत	७२	३७
चार वर्ण में सोई बड़ा	७३	,,
बतादे सखी कौन गली	७४	३८
देश मेरा बांका है	७५	,,
जगत में हरि सम मित्र	७६	३९
वा घर जय्यो हे नीन्द	७७	,,
राम ज्यूं राखे त्यूं रहिये	७८	,,

नाम शब्द	नं० शब्द	पृष्ठ
प्रभु जी भले बुरे हम तेरे	७६	४०
श्याम की ऊधो छवि	८०	"
वांस चढ़ी	८१	४१
कोई पीवो राम रस	८२	४१
जिसको तू नर तन	८३	४१
सब तज भज हरि	८४	४२
सुरता हे म्हरी धोवनिया	८५	"
इतना तो करना स्वामी	८६	"
आलम में किसका डर है	८७	३३
गुरु के समान नाही	८८	४४
तेरा पिंजरा बना है	८६	"
जो कोई चित्त से	६०	४५
अरे लोगो तुम्हें क्या	६१	"
मिलना कठिन है	६२	४६
घम घम्भोले नाथ	६३	"
अनुभव स्वरूप	६४	४७
विना दर्शन किये	६५	"
शरण अपनी में	६६	४८
सन्त सिद्धान्त कहें	६७	"
दीन बन्धो हम सबों को	६८	४६

नाम शब्द	नं० शब्द	पृष्ठ
नाथ मेरी भली जो बनी	९९	५०
मधुकर कृष्ण कठोर भये	१००	५१
भजो राधे कृष्ण	१०१	५२
भजले रे मन गोपाल गुण	१०२	५३
नातो नाम को मोसूं	१०३	,,
तेरा कोई नहीं रोकन हार	१०४	५४
त्यागिया तू	१०५	५५
कैसे जीउंरी मेरी माई	१०६	,,
बिर यो तो रंग गाढ़ा	१०७	,,
नैना लोभी रे	१०८	५६
मेरा मन राम ही राम	१०९	,,
अच्छे मीठे चाख २	११०	५७
मेरे तो एक राम नाम	१११	,,
शिव शिव रटत	११२	५८
कृष्ण खड़े आंगन में	११३	,,
ध्वनि प्रेमानन्द	११४	५९
रे भूले मन वृक्षों का मत ले	११५	,,
भज मन राम चरण	११६	६०
आये आये विदुर घर	११७	,,
श्री मन्नारायण	११८	६१

नाम शब्द	नं० शब्द	पृष्ठ
कवित्त दीन मलीन	१	६२
,, ऐसे विहाल	२	,,
,, मानस हों तो	३	,,
,, गउ के प्रताप	४	६३
सवैया पगन् पुर पहुंची	५	,,
कवित्त शेष महेश गणेश	६	६४
दोहे		६५ से ७०
प्रार्थना ईश्वर तू है सब का		७०
दोहे	१२०	७१ से ७६
प्रार्थना इतना तो करना	१२१	७६
सांवरिया गिरधारी	१२२	७७

—:(०):—

ओ३म् तत्सत् परब्रह्म परमात्मने नमोनमः

श्री सच्चिदानन्दानन्तस्वरूपाय नमोनमः

शब्द-संग्रह ।

दोहाः—नमो नमो गोविन्द गुरु, विनवौं अभिजन सोय ।
पहिले भये प्रणाम तिन, नमो जो आगे होय ॥
नमो नमो श्री रामजू, सत् चित् आनन्द रूप ।
जेहि जानत जग स्वप्नवत, नाशत भ्रम तम कूप ॥
ओ३म् निरंजनं दुःख भंजनं, ररंकार ओङ्कार ।
सत्य पुरुष सोऽहं तुही, अलखं सर्वाधार ॥

शब्द १

ओं निरंजन ररंकार प्रभु, सोऽहं सत्यनाम कर्तार ।
अच्युत गुरु गोविन्द दातार, परमानन्द रूप निरधार ॥टेक॥
एक अखण्ड ज्ञान भण्डार, तुमरी ज्योति का उजियार ।
मैं मैं मैं पन सर्वाधार, नेति नेति कर वेद उचार ॥ १ ॥
एक आत्मा अपरम्पार, शंकर ब्रह्मसर्व का सार ।
ओत प्रोत सब में निरंकार, जीवन प्राण आप ओंकार ॥ २ ॥

हरि नारायण अग्नि तार, देव देव मैं कर हूं पुकार।
कृष्णानन्ताचलहं गौड़ हुं, फट अल्ला सर्व पसार॥ ३॥
विनवा तुमको बारम्बार, प्रीतम प्यार करो उद्धार।
तद्रन गणपति नैन मंझार, होवे अनन्त तुम्हें नमस्कार॥ ४॥

शब्द २

हरि नारायण हरि नारायण नारायण हरि ओम् ओम्॥टेक॥
भव दुःख हारण, सब सुख कारण, पतित उधारण प्रभु ओ३म्२।
शुद्ध सच्चिदानन्द स्वरूपा, अगम अरूपा शिव ओ३म् २।
निगम निरूपा सुर नर भूपा, ज्योति स्वरूपा प्रभु ओ३म् २।
अनन्त अपारा पार न वारा, निरधारा हरि ओ३म्। २।
ब्रह्म विकाश स्वयं प्रकाश, जगन्निवास स्वामी ओ३म्। २।
राम गोविन्द परमानन्द, कृष्ण मुकुन्द गुरु ओ३म्। २।

शब्द ३

दीनानाथ दयानिधि स्वामी, कौन भांति मैं तुम्हें रिझाऊं।
श्री गंगा चरणों से निकसी, शूचो नीर कहां से प्रभु लाऊं॥
कामधेनु कल्प-वृक्ष तुम्हारे, कौन सो पदारथ भोग लगाऊं।
चार वेद तुम मुख से भासे, और कहा प्रभु पाठ सुनाऊं॥
अनहद बाजे बजत तुम्हारे, ताल मृदंग क्या शंख बजाऊं।
कोटि भानु थारे नख की शोभा, दीपक ले प्रभु कहां दिखाऊं॥
लक्ष्मी थारी चरणन की चेरी, कौन द्रव्य प्रभु भेंट चढ़ाऊं।

तुम तिरलोकी के करता हरता, तुम्हें छोड़ प्रभु कौन पै जाऊं ॥
सूरस्याम प्रभु विपत विडारन, मनवाँछित फल तुम ही से पाऊं ॥

शब्द ४

हमारे प्रभु एक तुमहीं ओंकार ।
मात पिता गुरु बन्धु सहोदर, धन विद्या परिवार ॥टेक॥
मन बल बुद्धि प्राण तुम ही हो, नयनन में उजियार ।
हरि होकर हरि रंग में दीसो, पत्र पुष्प फल डार ॥ १ ॥
धरणी आकाश शशी अरु तारे, बिजली में चमकार ।
ऊपर नीचे पर्वत सागर, सब तुम अपरम्पार ॥ २ ॥
तुम ही सूरज में हो गरजे, वर्षो अमृत धार ।
एक धुनी हो तुम से सबकी, तुमरा वार न पार ॥ ३ ॥
सुन्दर शक्ति विकाश शुद्धता, हमको दे दातार ।
काम क्रोध मद लोभ निवारो, परमानन्द दो प्यार ॥ ४ ॥

शब्द ५

मरहम हो सोई जाने भाई साधो, ऐसा देश हमारा है रे ॥टेक॥
बिन बादल बिजली वहां चमके, बिन सूरज उजियारा है रे ।
बिना नयन वहां मोती पुरोवें, बिन स्वर शब्द उचारा है रे ॥ १ ॥
भंवर गुफा में अनहद बाजे, मुरली बीन सितारा है रे ।
निरमल बूंद मिली दरिया में, नहीं मीठा नहीं खारा है रे ॥ २ ॥
जात वर्ण वहां सूझत नाहीं, ना वहां वेद विचारा है रे ।

[वहां आय ब्रह्म वन बैठे, कहन सुनन से न्यारा है रे ॥३॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो पहुंचेगा पहुंचन हारा है रे।
इस पद को जो समझत बूझत, अलख लखे सोई प्यारा हैरे ॥४॥

शब्द ६

मेरे सारे दुःख विसर गये, सतगुरु की मैंने शरण लई ॥टेक॥
और सखी सब दूवली, तू बिरहिन क्यों लाल।
अविनाशी की सेज पर, मौजां हुई है निहाल ॥१॥
अविनाशी की सेज का, कह कितना विस्तार।
कहन सुनन की गम नहीं, पौढ़त बेपरवाह ॥२॥
सतवन्ती पीहर बसे, अन्तर पिव का ध्यान।
कहती तो लाजाँ रहे ऐसा है आतम ज्ञान ॥३॥
हँसी नहीं मुसका गई, रहे टक टके नैन।
कहैं कबीरा लख गये, सखी सखी के सैन ॥४

शब्द ७

मेरा मन बानियां रे अपनी बान कभी ना छोड़े ॥टेक॥
हेर फेर के दोनों पलड़े, अन्दर कानी डांडी।
मन में झूठ कपट हिरदे में, हाट चौसले मांडी ॥१॥
पूरे बाट परे सरकावे, कमती बाट टटोले।
पासंग माहीं डाँडी मारे, बेगा बेगा बोले ॥२॥
घर तेरे में कुबध किराडी, छिन छिन में चित चोरे।

कुनबा तेरा बड़ा हरामी, अमृत में विष घोले ॥ ३ ॥
जल में तूही थल में तूही, घट घट में हरि बोले।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, भरम बन्धा जग डोले ॥ ४॥

शब्द ८

वा घर कभी न जाना जी जाके हिरदे ही में पाप ॥ टेक ॥
मात पिता का कहा न माने, गुरु के नहीं बचन में।
पर तिरिया सेनेह लगावे, सुरति नहीं भजन में॥ १ ॥
कंचन मैला कभी न होवे, दाग़ रति न लागे।
गठरी उसकी कौन छीन ले, पहरे अपने जागे ॥ २ ॥
बाहर उजला अन्तर काला, बुगले का सा भेष।
बाहर मैल द्वेष हिरदे में, भक्ति लगे ना लेष ॥ ३ ॥
गुरुमुख सोतो पार उतर गये, भव सागर जल तरिया।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, हरका सुमरण करिया ४

शब्द ९

बीरा मन समझियोरे लोभी, ये तिरने का घाट ॥ टेक ॥
कथनी के शूरे घने, सब बाँधे हथियार।
उत कोई बिरला डटै, जित बाजे तलवार ॥ १ ॥
शूरा रण में जायके, किस की देखे बाट।
ज्यों ज्यों पग आगे धरे आप कटे चाहे काट ॥ २ ॥
हीरा बीच बज़ार के, सब निरखें साहूकार।
जबलों जोहरी नाँह मिले, सबकी अकल ख़ुवार ॥ ३ ॥

सती जो सत पर चढ़ गई, कर प्रीतम से प्यार।
तन मन अपना जारि के, मांह मिला दई छार॥ ४॥
तन मन सौंपों गुरु अपने को, सत्य शब्द पहिचान।
मुश्किल से आसान हो गई, जबसे सौंप दई जान॥ ५॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो, लीजो आप संभाल।
चेता जाय तो चेत वावरे, नातर खायगो कफनी काल ६

शब्द १०

घायल ना जीवे, जाके लगे शब्द के सेल॥ टेक॥
लागी लागी सभी कहैं रे, लागी नाहीं एक।
लागी जब ही जानिये रे, घाव न आवे मेल॥ १॥
लागी उनको जानिये रे, राज तजै अलबेल।
अन्दर दीवा चस रहा रे, घला प्रेम का तेल॥ २॥
पढ़ना लिखना है नहीं रे, सत् संगत का खेल।
चार वेद घट में बसै हैं, साचे गुरु से मेल॥ ३॥
सत् संग सार अनेक हैं रे, काटें यम की बेल।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, झूठे जजत के खेल॥ ४॥

शब्द ११

गली तो चारों बन्द पड़ी, म्हारो पिया से मिलन कैसे होय॥ टेक
काम क्रोध मद लोभ मांह ने घेरी चारों गैल।
इन गलियन मेरे प्रीतम बसते कैसे करूं मैं वाकी सैल॥ १॥

पांच पच्चीस पहरवा ठाड़े रोक लिये सब ठाम।
यह विधिना ने कैसे कीनी बैरी बसायौ म्हारे गाम ॥ २ ॥
आशा तृष्णा खड़ी दुहेली इन में रहा समाय।
कनक कामिनी गहरा फन्दा अन्त तजो नहीं जाय ॥ ३ ॥
ज्ञान भक्ति वैराग योग का मारग दिया बताय।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ना कोई आवे न जाय ॥ ४ ॥

शब्द १२

आप ही धारम धारी म्हारे सत्गुरू आपही खेल खिलारी हो।टेक
तम्बू से असमान बनाये ज़मी ग़लीचा डारी है।
चांद सूरज दो मसल बनाये तारागण फुलवारी है ॥ १
सुरत निरत की चौसर माँडी तो पासा जग सारी है।
जिसकी नरद जीत घर आवे सो नर सुघड़ खिलारी है
सत को चीन्ह विहंगम चौरा जिसकी शून्य अटारी है।
जापर सत्गुरु राज़ी हो गये उसका जगत भिखारी है
अमर लोक को किया पयाना ज्ञान घोड़े असवारी है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो अबके जीत हमारी है

शब्द १३

रे मन क्यों भूला मेरा भाई ॥ टेक ॥
सुपने में राजा राज करत हैं हाकिम हुकम दुहाई।
भोर भई जब लाव न लश्कर आंख खुली सुध आई ॥ १

पक्षी आन वृक्ष पर बैठे रल मिल चौल्हर लाई।
भोर भई जब आप आपने जहां तहां उठ जाई ॥ २ ॥
भाई बन्धु और कुटुम्ब कबीला नाता सगा सनाई।
आदि अन्त मध्य तुही २ है झूठी मान बड़ाई ॥ ३ ॥
सागर एक लहर बहु उपजै गिन्ती गिनी न जाई।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो उलटी लहर समाई ॥ ४ ॥

शब्द १४

भजन बिन बावरे तैंने हीरा सा जन्म गंवाया ॥ टेक ॥
कभी न आया सन्त शरण में ना कभी हरि गुण गाया।
बह २ मरा बैल की न्याईं सोय रहा उठ खाया ॥ १ ॥
ये संसार हाठ बनिये की सब जग सौदे आया।
चातर माल चौगुना कीना मूरख मूल ठगाया ॥ २ ॥
ये संसार फूल संभल का सूआ देख लुभाया।
मारी चौंच रुई निकस्याई मूण्डी धुन पछताया ॥ ३ ॥
ये संसार माया का लोभी ममता महल चिनाया।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हाथ कछू ना आया ॥ ४ ॥

शब्द १५

मन्दिर में कांइयों ढूंढ़ती फिरे कुंज गली में भगवान ॥ टेक ॥
मूरत तो मन्दिर में मेंली वह ना मुखसे बोले।
करनी पार उतरनी बन्दे वृथा जन्म कांइयों खोले ॥ १ ॥

गऊ मुखते गंगा निकली पाँचो कपड़े धोले।
बिन साबुन तेरा मैल कटै है हर भज हौला होले ॥ २ ॥
तन कर कूण्डी मन कर साबुन याही में शील समोले।
सुरत ज्ञान का करै न मोगरा दिल की दुरमति धोले ॥ ३ ॥
शील सत्य की नवका चढ़के हर के दर्शन जोले।
कहै कबीर सुनो भाई साधो पर्वत राई के ओल्हे ॥ ४ ॥

शब्द १६

बागाँ ना जारे तेरी काया में गुलज़ार ॥ टेक ॥
करनी क्यारी बोय के रे रहनी कर रखवार।
दया पौद सूखे नहीं शील क्षमा जल डार ॥ १
मन माली पर बोध के रे संयम की कर बार।
दुर्मति काग उड़ाय के रे देखे क्यों न बहार ॥ २ ॥
मन गुलाब चित केवड़ा रे फूल रही फुलवार।
मुक्ति कली खिल रही रे गूंथ पहरले हार ॥ ३ ॥
लोभ लहर गहरी नदी रे लख चौरासी धार।
निगुरे निगुरे बह गये रे सन्त उतर गये पार ॥ ४ ॥
अष्ट कमल दल ऊपरे रे महिमा अपरम्पार।
कहत कबीर सुनो भाई साधो आवा गमन निवार ॥ ५ ॥

शब्द १७

साधो मूला बेटा जायो, गुरु प्रताप साधु की संगत खोज कुटुम्ब सब खायो ॥ टेक ॥

ममता माई जन्मत खाई पाप पुण्य दोऊ भाई।
काम क्रोध दो काका खाये खाई तृष्णा दाई ॥ १ ॥
राग द्वेष पारोसी खाये शुभ अशुभ दोऊ मामा।
मोह नगर का राजा खाया तब पहुंचा उस धामा ॥ २ ॥
दुविधा दादी अहं बड़ दादा मुख देखत ही मूआ।
मंगल चार बधाई बाजी जब यह बालक हुवा ॥ ३ ॥
ज्ञान नाम धर्‌यो बालक को शोभा बरणी न जाई।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो घट २ रहा समाई ॥ ४ ॥

शब्द १८

शब्द ही शब्द भयो उजियारो सत्गुरु भेद बतायो, अपन को आपा ही में पायो ॥ टेक ॥
जैसे कामिन सुत ले सोई सुपने माहीं बुलायो।
जागि परी पलिका पर देखो ना कहीं गयो न आयो ॥ १ ॥
जैसे कमरी कंठ को हीरा आभूषण बिसरायो।
संग की सहेली मिल भेद बतायो जीव को भरम नसायो ॥ २ ॥
जैसे मृग नाभि कस्तूरी डोलत बन बन धायो।
नाशा श्वास भई जब आगे पलट निरन्तर आयो ॥ ३ ॥
कहा कहूँ वा सुख की महिमा गूंगे ने गुड़ खायो।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो ज्यों का त्यों दरशायो ॥ ४ ॥

शब्द १८

लाडो मेंडुकी री तू तो पानी में की रानी ॥ टेक ॥
कउआ तेरा भैया भतीजा चील लगे दौरानी ।
बगला तेरा छोटा देवर वाय देखि मुसकानी ॥ १ ॥
अन्धेने मणिके को बींधा बिन अंगुली सुई चलानी ।
बिन ग्रीवा के माला पहरी बिन जिह्वा के वाणी ॥ २ ॥
चार चिरैयां मंगल गावें टौंटा ताल बजावे ।
सूतन पहर गधैया नाचे ऊंट विसन पद गावे ॥ ३ ॥
कहै कबीर सुनो भाई साधो यह पद है निर्वाणी ।
जो इस पद की निंदा करे है वाको नरक निशानी ॥ ४ ॥

शब्द १९

तन मन धन बाजी लाय रही ॥ टेक ॥
चौपड़ मांड़ी पीव से रे तन मन धन बाजी लाय ।
हारी तो पीव की भई रे जीतूं तो पिया मेरा रे ॥ १ ॥
चार गली घर एक है रे वर्ण २ के लोग ।
मनसा वाचा कर्मणा हे प्रीति निभैयो ओड़ ॥ २ ॥
लख चौरासी भरम के हे पोह पर अटकी आय ।
जो अबके पोहना पड़े हे बहुरि चौरासी जाय ॥ ३ ॥
कहैं कबीर धर्मदास को है जीत भई को हार ।
अबके जो बाजी जीत जायरे सोही सुहागन नार ॥ ४ ॥

शब्द २१

मेरी सुरत सुहागन जाग री ॥ टेक ॥
क्यों तू सोवे मोह नींद में उठ के भजन बिच लाग री ॥ १ ॥
अनहद शब्द सुनो चित देके उठत मधुर धुन राग री ॥ २ ॥
चरण शीश धर विनती करियो पावे अचल सुहाग री ॥ ३ ॥
कहत कबीर सुनो म्हारी सुरतां जगत पीठ दे भाग री ॥ ४ ॥

शब्द २२

शब्द झड़ लाग्यो री बरसण लाग्या रंग ॥ टेक ॥
जन्म मरण की चिंता भागी समरथ नाम भजन लौ लागी ।
म्हारे सतगुरु दीनी सैन सत्य घर पा गयोरी ॥ १ ॥
चढ़ी सुरति पश्चिम दरवाज़ा त्रिकुटी महल पुरुष एक राजा ।
अनहद की झनकार बजे जहां बाजारी ॥ २ ॥
अपने पिया संग जाकर सोई संशय शोक रहा नहीं कोई ।
कट गये करम कलेश भरम भय भागारी ॥ ३ ॥
शब्द विहंगम चाल हमारी कहैं कबीर सतगुरु दई तारी ।
रिम झिम रिम झिम होय काल वश आय गयागी ॥ ४ ॥

शब्द २३

भजन में होत आनन्द अनन्त ॥ टेक ॥
बरसें शब्द अमी के बादल भीजें महरम सन्त ॥ १ ॥
कर अस्नान मग्न हो बैठे चढ़ा शब्द का रंग ॥ २ ॥

अगर बास जहां तत की नदियां बहत धारा गंग ॥ ३ ॥
तेरा साहिब है तेरे माहीं पारस परसे अंग ॥ ४ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो जपले ओंऽसोऽहं ॥ ५ ॥

शब्द २४

मोय नीको लागै बाजे अनहद तूर ॥ टेक ॥
सोऽहं सोऽहं ध्वनि होत है चहुं दिशि रही भर पूर ॥ १ ॥
रैन दिवस घन घोर उठत है क्या नीड़े क्या दूर ॥ २ ॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो वर्षे नूर ही नूर ॥ ३ ॥

शब्द २५

मैं कैसे आऊंगी सांवरिया थारी विकट नगरिया ॥ टेक ॥
नाम निशानी थारा पन्थ दुहेला चढ़त देख मेरा तन मन जरिया
जब लग नेजू थारी पहुंचत नाहीं तब लग आवे खाली गगरिया
बेगमपुर सोई जन जांयगे रुम रूम जिनके प्रेम की पुरिया ॥ ३
कहैं कबीर सोई जन पहुंचे ब्रह्म अग्नि पर जिनका तन मन जरिया

शब्द २६

लगन बिन जागै ना निर्मोही ॥ टेक ॥
बिना लगन की प्रीति बावरे अ स नीर ज्यों धोई ॥ १ ॥
हमतो रहते राम भरोसे रज़ा करै सोंई होई ॥ २ ॥
बिन कृपा सद्गुरु नहीं पावे लाख जतन करो कोई ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरु बिन मुक्ति न होई ॥ ४ ॥

शब्द २७

माया हो रंग बादली जामें चन्दा हो दरशे नाँह ॥ टेक ॥
काया में माया बसै ज्यों पत्थर में आग ।
जो तेरी इच्छा हरि मिलन की चकमक होके लाग ॥ १ ॥
चोर चुराई तूंबरी जल में डूबे नांह ।
वह डोबे वह ऊभरे करनी छानी नांह ॥ २ ॥
काम क्रोध के बने बदरवा गर्ज रहा अहंकार ।
आशा तृष्णा खिवें बीजली भीज रहा संसार ॥ ३ ॥
ज्ञान पवन जब से चली सब बादल दिये उड़ाय ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो चन्दा हो दर्शा आय ॥ ४ ॥

शब्द २८

अजपा जाप जपो भाई साधो श्वासों की करलो माला मोरे रामा ॥ टेक ॥
हाथ सुमरनी बगल कतरनी यह क्या रच दियो चाला ।
लोगों के भावें भक्ति कमावे साहिब के मुख काला ॥ १ ॥
जब लग दरशे ना सच्चा साईं होवे ना घट उजियाला ।
बिन सत्गुरु ताली नहीं लागे खुले न भ्रम को ताला ॥ २ ॥
मन का मनियां फेर प्राणी क्यों हो रहा मतवाला ।
गठड़ी खोल लाल नहीं परखा इस विधि आया दिवाला ॥ ३ ॥
साध सन्त की सेवा करले सन्तों का देश निराला ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो पीलो निर्गुण प्याला ॥ ४ ॥

शब्द २९

सुना है हमने निर्बल के बलराम ॥ टेक ॥
जब तक गज बल अपनो कीनो सरोना एकहु काम ।
जब गज ने हरि नाम सम्हारो आ गये आधे नाम ॥ १ ॥
दीन होय जब द्रोपदी टेरी बसन रूप धरा श्याम ॥ २ ॥
बहुत ही साख सुनी सन्तन की अड़े संभारे हैं काम ।
नरसी भक्त की हुण्डी पेली दिये रोकड़ा दाम ॥ ३ ॥
जप बल तप बल और भुजा बल चौथे बल हैं दाम ।
कहत कबीर सुनो भाई साधो हारे के हरिनाम ॥ ४ ॥

शब्द ३०

कछु लेना न देना मगन रहना ॥ टेक ॥
पांच तत्त्व का बना पींजरा जामें बोले मेरी मैना ॥ १ ॥
तेरो पिया तेरे घट में बसत है सखी खोल कर देखो नैना ॥ २ ॥
गहरी नदिया नाव पुरानी खेवटिया से मिले रहना ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो गुरु के चरण में लिपट रहना ॥ ४ ॥

शब्द ३१

जन्म तेरो बातोंमें बीत गयो, तैंने कबहूं न कृष्ण कह्यो ॥टेक॥
पांच बरस का आला भोला अब तो बीस भयो ।
मकर पचीसी माया कारण देश विदेश गयो ॥ १ ॥

तीस बरस की अब मति उपजी लोभ बढ़ै नित नयो।
माया जोड़ी लाख करोड़ी अजहूं न तृप्त भयो॥ २॥
वृद्ध भये जब आलस्य उपज्यो जप तप कण्ठ रह्यो।
साधु की संगति कबहूं न कीनी वृथा जन्म गयो॥ ३॥
यह संसार मतलब का लोभी झूंठा ठाठ ठठ्यो।
कहत कबीर समझ मन मूरख तू क्यों भूल गयो॥ ४॥

शब्द ३२

तुम देखो सन्तो भूल भुलय्याँ का तमाशा॥ टेक॥
ना कोई आता न कोई जाता झूठा जगत का नाता।
ना काहू की बहन भानजो ना काहू की माता॥ १॥
ड्योढ़ी लग तेरी तिरिया जावे पोली लग तेरी माता।
मरघट तक सब जांय बराती हंस अकेला जाता॥ २॥
एक तई ओढ़े दोतई ओढ़े ओढ़े मलमल खासा।
शाल दुशाला नित की ओढ़े अन्त खाक़ मिल जाता॥ ३॥
कौड़ी कौड़ी माया जोड़ी जोड़े लाख पचासा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो संग चले ना माशा॥ ४॥

शब्द ३३

मैं तेरा स्वामी मुझे ना दिल से भूल॥ टेक॥
तुही धरन में तुही गगन में तू मूलन का मूल॥ १॥
तुही डार में तुही पात में तुही रंगीला फूल॥ २॥

गोपीचन्द भरथरी राजा सिर में डारी धूर ॥ ३ ॥
दास कबीर शरण तेरी आया होवे अर्ज कबूल ॥ ४ ॥

शब्द ३४

दिवाने क्या गावे घर दूर ॥ टेक ॥
अनलहक़ कह हक़ को पहुंचा सूली चढ़ मंसूर ॥ १ ॥
शेख फरीद कूए में लटका गिरे तो चकना चूर ॥ २ ॥
स्याही गई सफेदी आई चलना है बड़ी दूर ॥ ३ ॥
बलखबुखारे के बादशाह ने नो सौ छोड़ी हूर ॥ ४ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो हरदम हाज़िर हजूर ॥ ५ ॥

शब्द ३५

गुरु ने मेरे बाण मारा ॥ टेक ॥
ना मारी मेरे छुरी कटारी शब्दों का मारा न्यारा न्यारा ॥ १ ॥
औषधि मूल मन्त्र नहीं लागे क्या करै वैद्य विचारा ॥ २ ॥
कच्चा कोट पक्का दरवाज़ा घायल आन पुकारा ॥ ३ ॥
कहैं कबीर सुनो भाई साधो लेलो नाम सहारा ॥ ४ ॥

शब्द ३६

मोको कहां ढूंढे रे बन्दे मैं तो तेरे पास में ॥ टेक ॥
ना तीरथ में ना मूरत में ना एकान्त निवास में ।
ना मन्दिर में ना मसजिद में ना काशी कैलाश में ॥ १ ॥

ना मैं जप में ना मैं तप में ना मैं व्रत उपवास में।
ना मैं क्रिया करम में रहता ना मैं योग संन्यास में ॥ २ ॥
नहीं प्राण में नहीं पिण्ड में ना ब्रह्माण्ड आकाश में।
ना मैं त्रिकुटी भंवर गुफा में सब श्वासन की श्वास में ॥ २ ॥
खोजी होय तुरत मिल जाऊं एक पल ही की तलाश में।
कहे कबीर सुनो भाई साधो मैं तो हूं विश्वास में ॥ ४ ॥

शब्द ३७

बने जो कुछ धर्म करले, यही एक साथ जावेगा।
गया अवसर न तेरे फिर यह, हरगिज़ हाथ आवेगा ॥टेक॥
दिवाना बन के दुनियां में, समय अनमोल खोता है।
दिये लाखों की दौलत भी, न पल रहने तू पावेगा ॥ १ ॥
धरी रह जायगी तेरी अकड़, सारी ठिकाने पर।
जब आके यम जकड़ गरदन, पकड़ कर धर दबावेगा ॥ २ ॥
कुटुम्ब परिवार सुत जोई, सहायक होगा ना कोई।
तेरे पापों की गठड़ी ख़ुद, तुही सिर पर उठावेगा ॥ ३ ॥
गर्भ में था कहा तूने, न भूलूंगा प्रभू तुझ को।
भला तू जाय के अपना, उसे क्या मुंह दिखावेगा ॥ ४ ॥
तुझे तो घर से जंगल में, तेरा ही ख़ुद ब ख़ुद बेटा।
सुला कर लड़कियों के ढ़ेर, पर तुझको जलावेगा ॥ ५ ॥
कहैं कबीर समझाई, तू कहना मान ले भाई।
नहीं तो अपनी टुकराई, वृथा सारी गंवावेगा ॥ ६ ॥

शब्द ३८

मैं हार गई मेरे राम धन्धो करती करती घर को ॥ टेक ॥
उठ सवेरे पीसन लागी रह्यो पहर को तड़को।
आग गेर पानी को चाली दे छोरा के जर को ॥ १ ॥
सुसर स्वभाव आकरो कह्यो बड़बड़ाट को मड़को।
सास निपूती कह्यो न मानै बैठी मार मचड़को ॥ २ ॥
नणद हठीली हठ की पक्की सहज बुरो देवर को।
पीस पोय के हुई नचीती अब ले बैठी चरखो ॥ ३ ॥
चार पहर धन्धे में बीते नाम लियो ना हर को।
कहै कबीर सुनो भाई साधो चौरासी को धड़को ॥ ४ ॥

शब्द ३९

नारद मुनि मेरे सन्तों से अन्तर नाहीं (नारद मुनि ज्ञानी) ॥ टेक
सन्त चल पाछे उठ चालूं मोहे सन्तन की आशा।
जहां मेरे साधु भजन करैं हैं वहीं हमारा बासा ॥ १ ॥
साध जेमें जहां भोजन जेमूं साध सोवें तहां सोऊं।
जो कोई मेरा सन्त सतावे लाख जतन कर खोऊं ॥ २ ॥
लक्ष्मी मेरी अर्धशरीरी सो सन्तन की दासी।
अठसठ तीर्थ सन्तों के चरणा कोटि गया और काशी ॥ ३ ॥
मन करम वचन चरण चित लावे सोई परम पद पावे।
कहै कबीर सुनो भाई साधो हरि अपने मुख गावे ॥ ४ ॥

शब्द ४०

हमारे प्रभु अवगुण चित्त ना धरो ॥
समदर्शी है नाम तुम्हारो चाहो तो पार करो ॥ टेक ॥
इक नदिया इक नार कहावत मैलो नीर भरो ।
जब मिल गयो तब रूप एक भयो गंगा नाम परो ॥१॥
एक लोहा पूजा में राखे एक घर बधिक परयो ।
ऊंच नीच पारस नहीं जाने कंचन करत खरो ॥ २॥
अबकी बेर मोय नाथ उबारो नहीं प्रण जात टरो ।
यह माया भ्रम जाल निवारो सूरदास सगरो ॥ ३॥

शब्द ४१

चले गये दिल के दामन-ीर ॥ टेक ॥
जब सुध आवे तुमरे दर्श की उठें कलेजे पीर ॥ १ ॥
नटवर भेष नयन रतनारे सुन्दर श्याम शरीर ॥ २ ॥
वृन्दावन वंशीवट त्यागो निर्मल जमना नीर ॥ ३ ॥
आप ही जाय द्वारका छाये खारी नद के तीर ॥ ४ ॥
सब गोपियन को नेह विसारो ऐसे भये बे पीर ॥ ५ ॥
सूरदास ललिता उठ बोली, आखिर जात अहीर ॥ ६ ॥

शब्द ४२

लज्जा मेरी राखो ना श्याम हरी ॥
कीनी कठिन दुशासन मोय से गह केसों पकड़ी ॥ टेक ॥

आगे सभा दुष्ट दुर्योधन चाहत नगन करी ।
पांचों पण्डा सभी बलहारे इनसे कछु न सरी ॥ १ ॥
भीष्म द्रोण विदुर भये विस्मय इन सब मौन धरी ।
अब नहीं मात पिता सुत बान्धव एक टेक तुमरी ॥ २
बसन प्रवाह दिये करुणानिधि सेना हार परी ।
सूरदास जब सिंह शरण लई स्यारों की काहि डरी ॥३॥

शब्द ४३

किन तेरो गोविन्द नाम धरो ॥ टेक ॥

लेन देन के तुम हितकारी मंते कछुना सरो ।
विप्र सुदामा कियो अयाचक तन्दुल भेट धरो ॥ २
द्रुपद सुताकी तुम पत राखी अम्बर दान करो ॥ ३
सन्दीपन के तुम सुत लाये विद्या पाठ पढ़ो ॥ ४ ॥
सूर की बिरियां निठुर हो बैठे कानन मूंद धरो ॥ ५

शब्द ४४

सब दिन होत एक समान ॥ टेक ॥

एक दिन राजा हरिश्चन्द्र गृह, सम्पति मेरु समान ।
एक दिन जाय श्वपच घर सेवत, अम्बर हरत मशान ॥ १ ॥
एक दिन दूलह बनत बराती चहुंदिश दुरत निशान ।
एक दिन डेरा होत जंगल में कर सूधे पग तान ॥ २ ॥

एक दिन सीता रुदन करत है महा विपन उद्यान।
एक दिन रामचन्द्र मिल दोऊ विचरत पुष्प विमान ॥ ३॥
एक दिन राजा राज युधिष्ठिर अनुचर श्री भगवान।
एक दिन द्रोपदी नग्न होत है चीर दुशासन तान ॥ ४॥
प्रकटत है पूरब की करनी तज मन शोच अजान।
सूरदास गुण कहं लग वरनों विधि के अङ्क प्रमान ॥ ५॥

शब्द ४५

अंखियां मोहन की बिन देखे रहा न जाय ॥ टेक ॥
जिन नयनन में श्याम बसत हैं दूजा नाहीं सुहाय ॥ १॥
काजर रेख किरकिरा लागे सुरमा नाहीं ठहराय ॥ २॥
मेरे अंगना में श्याम आयके मटकी लेत उठाय ॥ ३॥
और के डरते डरपत नाहीं जसुधा देख डराय ॥ ४॥
वंशी वारे मोहना वंशी नेक बजाय ॥ ५॥
तेरी वंशी ने मेरो मन हरो घर अंगना न सुहाय ॥ ६॥
सूरदास प्रभु तुमरे मिलन को हरिसें हेत लगाय ॥ ७॥

शब्द ४६

भजोरे मन शुद्ध सच्चिदानन्द ॥ टेक ॥
सकल ब्रह्माण्ड पुकारें जिनको अनन्त अपार अखण्ड ॥ १॥
पुष्प कुमार गगन में तारे वरणत सूरज चन्द ॥ २॥

सभी वस्तु की सुन्दरतायें जितलावें गोविन्द ॥ ३ ॥
ओंकार अज ज्योति स्वरूपा पूरण परमानन्द ॥ ४ ॥

शब्द ४७

तेरा यह खेल अपारा है जित देखूं तित तू ही तू है ॥ टेक ॥
तूही बन में तूही घर मन्दिर में कूप बावड़ी तूही सरवर में ।
तुही सबका करतार भरम से न्यारा है ॥ १ ॥
इन्द्रियों में देखा तू ही मन है शुद्ध करण में तू ही पवन है ।
वरुणों तू ही वरुण जलों में गंगा धारा है ॥ २ ॥
ज्ञानी में ब्रह्म ज्ञान तू ही है योगी का मुख ध्यान तुही है ।
सबका जीवन प्राण तू ही आधारा है ॥ ३ ॥
फूल पात फल डाल तू ही है कालों का महाकाल तुही है ।
परमानन्द प्रकाश शब्द ओंकारा है ॥ ४ ॥

शब्द ४८

मेरे हो मन माना है गुरु नज़र निहाल दयाल ॥ टेक ॥
अधर आकाश अधर वाको बंगाला घट २ आप समाना है ॥ १ ॥
सब से परे दूर नहीं नेड़े अद्भुत रूप लखाना है ॥ २ ॥
भवसागर से उतरण कारण गुरु शब्द जलयाना है ॥ ३ ॥
षड़ दरशन में पड़ी खट पटी बड़ा सोई जिन जाना है ॥ ४ ॥
धीसा सन्त शरण सत्गुरु की जिन डारा मान गुमाना है ॥ ५ ॥

शब्द ४९

मन परदेशी हो यह नहीं अपना देश ॥ टेक ॥
सत का कहना सत में रहना आनन्द रूप किसी का भयना।
जो कोई कहै सभी की सहना ये ही रटन हमेश ॥ १ ॥
गुरु का बचन सत्य कर मानो जगत जाल झूठा कर जानो।
तत्वमसि का रूप पिछानो कट जांय करम कलेश ॥ २ ॥
जो दीखे सो रूप हमारा कोई नहीं है हम से नियारा।
मित्र और शत्रु कोई न हमारा मिट गये राग और द्वेष ॥ ३ ॥
शाह गुरु शुकदेव विराजे चरणदास चरणों में साजे।
गुरु के बचन कभी नहीं त्यागे यही सत्य उपदेश ॥ ४ ॥

शब्द ०

तू तो कोई अजब है तेरा अजब तमाशा जग में जोर ॥ टेक ॥
तू ही राम तैंने रावण मारा तू है नन्दकिशोर।
तू ही इन्द्र इन्द्रासन तेरा तू बरसे घन घोर ॥ १ ॥
तू ही ब्रह्मा तू ही विष्णु महादेव तू कमलापति गौर।
रूपों में सब रूप धरे हैं तू ही करे है किलोल ॥ २ ॥
पांच तत्व और तीन गुणों में दशों दिशा चहुं ओर।
पिंड ब्रह्माण्ड में तू ही विराजे तू पूर्ण सब ठौर ॥ ३ ॥
तू ही गुप्ता तू ही मुक्ता घट घट ब्रह्म चकोर।
चरणदास रोचक कूं भाषे दूजा नहीं है कोई और ॥४॥

शब्द ५१

हंसा चाल बसो वा देश जहां का बसा फेर ना मरे ॥ टेक ॥
जहां अगम निगम दोउ धाम धास तेरा परे से परे।
जहां वेदों की गम नांय ज्ञान और ध्यान भी डरे ॥ १ ॥
जहां बिन धरणी की बाट चरणों ते बिना गमन करे।
जहां बिन श्रवण सुन ले नयनों के बिना दरश करे ॥ २ ॥
तहां बिन देही एक देव प्राणों के बिना श्वास भरे।
जहां जगमग जगमग होय उजारे। दिन रात रहे ॥ ३ ॥
यहां प्रेम नगरिया के घाट अधर दरियाय बगे।
जहां सन्त करैं असनान दूजा तो कोई न्हाय न सके ॥ ४ ॥
जाके न्हाये से सुख होय तपत तेरे तन की मिटे।
तेरे जन्म मरण मिट जाँय चौरासी का फन्द कटे ॥ ५ ॥
यों कहते नाथ गुलाब अमरापुर थारा बास करे।
गुण गावें भानीनाथ आनन्द में सदा लगा ही रहे ॥ ६ ॥

शब्द ५२

मेरा राम सनेही जोगी रावलिया मेरी नगरी में उतरा है आय ॥
चार कूंट की रम्मत करता धरती धरे न पांव।
तीन लोक झोली में राखे राई में रह्यो समाय ॥ १ ॥
आओ सखी याय देखलें जाका रूप लखा नहीं जाय।
पीड़ो चाहे परतीत न छोड़ूं मेरे हिरदेमें रह्यो समाय ॥ २ ॥

बरजी काहु की ना रहूं बिन हर देखे रहा न जाय।
अचरज रूप धरा अविनाशी श्रीनाथ गुलाब लुचाय ॥३॥

शब्द ५२

घूंघट खोल दे तेरे पलकों के आगे है राम, भरमने तोड़दे ॥टेक॥
पलकों आगे अलख बावरी नूर रहा भर पूर।
अन्दर बाहर सर्व स भरिया क्या नेड़े क्या दूर ॥१॥
शिर से शक्त उतार चुनरिया परदा भरम उठाय।
जब तुझे दरसे नित्य बावरी रोम रोम रह्यो छाय ॥२॥
पुस्तक लिखिया न जाय बावरी रेख खिचे ना लीक।
द्रष्टिन मुष्टिन आवे सजनी पवना ते बारीक ॥३॥
दरिया लहर भेद ना बौरी जीव ब्रह्म न देाय।
एक ही ब्रह्म सकल घट व्यापी दिल की दुरमत खोय ॥४॥
हाथ में कंगन बांध सुहागन काय को लिया दुहाग।
हाथ में मेंहदी नयन सुरमा सारो श्री नाथ गुलाब ॥५॥

शब्द ५३ (अ)

बादला झुक आया भीजे म्हारी काया रो चीर ॥ टेक ॥
प्रेम घटा अेालर आइ रे गगन से तनमन भीज गया हरि रंग से।
बरसे निर्मल नीर इन्दु ज्यों लहराया ॥ १ ॥
जहां बरसे जहाँ बिजली चमके घन गरजे और दामिनी दमके।
बर्षे अमृतधार इन्द्र ज्यों झड़ लाया ॥ २ ॥

बस्ती बसो चाहे बन उठजाओ तीरथजाओ चाहे मलमल न्हावो
जिनका तन मन भया फ़क़ीर शब्द में चित लाया ॥ ३ ॥
नाथ गुलाब दिया गुरु हेला भानी नाथ सुनो निज चेला ।
उलट पवन को डाट गगन थारो घर छाया ॥ ४ ॥

शब्द ५४

जिन्होंने मन मार लिया मैं तो उन सन्तों का हूं दास ॥ टेक ॥
आपा मार जगत में बैठे नहीं किसी से काम ।
उन में तो कुछ अन्तर नाहीं सन्त कहो चाहे राम ॥ १ ॥
मन मारा तन वश किया सभी भरम भये दूर ।
बाहर तो कुछ सूझे नाहीं अन्दर झलके नूर ॥ २ ॥
प्याला पी लिया नाम का जी छोड़ा जगत का मोह ।
हमको सतगुरु ऐसे मिलगये सहज मुक्ति गई होय ॥ ३ ॥
नरसी जी के सतगुरु स्वामी दिया अमीरस प्याय ।
एक बूंद सागर में मिल गई कहा करे यम राय ॥ ४ ॥

शब्द ५५

काम क्रोध मद लोभ मोह ने हो गुरु इनने मेरी मत मारी ॥टेक
केवल ब्रह्म रूप था मेरा पांच तत्व में लिया बसेरा ।
इन्द्रिय आदि कर्म से लागी बुद्धि है सब से न्यारी ॥ १ ॥
आदि जन्म का हूं अधिकारी दुःख में याद आई बुध सारी ।
मनुवा खोज कनौज के देखा बिगड़ रही केशर क्यारी ॥ २ ॥

शून्य समाध में जाय समाया चेला गुरवा कुछ नहीं पाया।
आपही आप पुकारत आया अब समझा मूरख सारी ॥ ३ ॥
सहज ही आसन अमर सिंहासन धुन में प्राण करे सुखवासन।
शरण मछन्दर गोरख बोले जान जान हुआ हितकारी ॥ ४ ॥

शब्द ५६

सत्य नाम करतारे म्हारे सत्गुरु निश्चय लड़ी सहारे मोरे रामा ॥ टेक ॥

राजा राम बसे घट भीतर बाहिर हाथ न आवे मोरे रामा।
सत्गुरुकी तुम सेवा करलो वो तुम्हें राह बतावें मोर रामा ॥ १ ॥
नाभि कमल से रस्ता चाल्यो सहज ही आवे जावे मोरे रामा।
आगे महल त्रिकुटी कहिये वहां गये सुध पावे मोरे रामा ॥ २ ॥
महल त्रिकुटी जगमग झलके देखत ही मुसकावे मोरे रामा।
झीनी झीनी बाज होत अनहद की आगेको उठधावे मोरे रामा ॥
गुरु प्रताप सन्त की सेवा खोजेंगे सोई पावें मोरे रामा।
शरण मछन्दर जतीगोरख बोले गुरु अपना दरशावें मोरेरामा ४॥

शब्द ५७

बंगला भला बना दरवेश जा में नारायण परवेश ॥ टेक ॥
पांच तत्त्व की ईंट बनाई तीन गुणों का गारा।
छत्तीसों की छात बना कर चिनगया चिननेहारा ॥ १ ॥

इस बंगले के दश दरवाजे बीच पवन का थंवा।
आवत जावत कोऊ न जाने देखो बड़ा अचम्बा ॥ २ ॥
इस बंगले में चौपड़ मांडी खेलें पांच पचीस।
कोई तो बाज़ी हार चला है कोई चला जुग जीत ॥ ३ ॥
इस बंगले में पातर नाचे मनुवा ताल लगावे।
सुरत निरत के पहर घूंघरू राग छत्तीसों गावे ॥ ४ ॥
कहें मछन्दर सुन बाले गोरख जिन यह बंगला गया।
इस बंगले के गाने वाला बहुर जन्म नहीं आया ॥ ५ ॥

शब्द ५८

मारग में लूटैं पांच जनी ॥ टेक ॥

पांच पचीसों ने घेरा घाटा साधु जन चढ़ गये उलटी बाटा।
घेर लिया सब औघट घाटा कलियुग चमके सेल अनी ॥ १ ॥
बन में लुट गये मुनि जन नागा डस गई ममता उलटा भागा।
जा के कान गुरु ना लागा शृंगि ऋषि से आन बनी ॥ २ ॥
आशा तृष्णा नदियां भारी बह गये संत बड़े डिमधारी।
जो उभरे सो शरण तिहारी पार लगाइयो आप धनी ॥ ३ ॥
शंकर लुट गये नेज़ा धारी परजा रैयत कौन बिचारी।
भूल पड़ी कर्मन की मारी तिरगुण झुक रही तीन अनी ॥ ४ ॥
रामानन्द दिया गुरु हेला दास कबीर चरणन का चेला।
बंका मारग पंथ दुहेला सिमिरो सिरजनहार धनी ॥ ५ ॥

शब्द ५६

तीरथ में मायाजाल में फंसी सुरत मेरी राम से लगी समझ
सुहागन सुरता नार, ॥ टेक ॥

लगनी लंहगा पहर सुहागन बीती जाय बहार ।
धन जोबन है पाहुना री आवे न दूजी बार ॥ १ ॥
राम नाम का चुड़ला पहरो निर्गुण सुरमा सार ।
नख बेसर हरि नाम की री उतर चलो न परले पार ॥ २ ॥
ऐसे वर को कहा वरूं जो जन्मतड़ा मर जाय ।
वर पाऊं श्री सांवरो जी चुड़ला अमर हो जाय ॥ ३ ॥
मैं जान्यो हरि मैं ठग्यो जी हरि ठग ले गयो मोय ।
लख चौरासी मोरचे जी पल में ही डारे तोर ॥ ४ ॥
सुरत चली जहां मैं चली निरंकार झनकार ।
अविनाशी की पौर पर रे मीरां करे पुकार ॥ ५ ॥

शब्द ६०

सो राणा जी तैं ज़हर दियो म्हाने जानी ॥ टेक ॥

भर भर के दिये ज़हर पियाले व्है गयो अमृत पानी ॥ १ ॥
जब लग सोना कसिये नाहीं होत न बारा बानी ॥ २ ॥
मोय भरोसा श्याम सुन्दर का मेरी घटत न कानी ॥ ३ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर चरण कमल लिपटानी ॥ ४ ॥

शब्द ६१

पिया बिन सूनो छै म्हारो देश ॥ टेक ॥
ऐसा है कोई पीय से मिलावे तन मन धन करूं पेश ॥ १ ॥
थारे कारण बन बन डोलूं कर जोगिन का भेष ॥ २
प्रीतम प्यारे दरश दिखा जा तुम बिन बहुत कलेश ॥ ३ ॥
अवधि बदी थी अजहूं न आये रूपा हो गये केश ॥ ४ ॥
मीरां के प्रभु गिरधर नागर तज दियो नगर नरेश ॥ ५ ॥

शब्द ६२

मालिक कुल आलम के हो तुम सच्चे श्री भगवान् ॥ टेक ॥
सूरज चाँद पवन और पानी धरती बीच असमाक ।
सब में जलवा तेरा ही देखो कुदरत पर कुरबान ॥ १ ॥
भारत में अर्जुन के ख़ातिर आप बने रथवान ।
उसने अपने कुल को देखा छुट गये तीर कमान ॥ २ ॥
ना कोई मारे न कोई मरता तेरा ही अज्ञान ।
आतम एक अचल अविनाशी यह गीता को ज्ञान ॥ ३ ॥
मुझ आजिज़ पर कृपा कीजो बन्दा अपना जान ।
मीर माधो शरण तुम्हारी लगा चरणन से ध्यान ॥ ४ ॥

शब्द ६३

अरी एरी ऊदां लागी का नाम न ले ॥ टेक ॥
जल से प्रीत करी मछली ने तड़फ तड़फ जिया दे ॥ १ ॥

नादों से प्रीत लगी मिरगां की सम्मुख सेल सहँ ॥ २ ॥
दीपक से प्रीत लगी है पतंग की वार फेर जिया दे ॥ ३ ॥
मीरां की प्रीति लगी है सन्तों से गुरु चरणों चित्त दे ॥ ४ ॥

शब्द ६४

तेरा जन राम रसायन माता ॥ टेक ॥
प्रेम रसा निधि जाको उपजे छोड़ न कतऊ जाता ॥ १ ॥
सोवत हरि हरि बैठत हरि हरि हरि रस भोजन खाता ॥ २ ॥
सफल जन्म हरिजन का उपजिया कीनों है सात विधाता ॥ ३
सकल समूह ले उधरे नानक पूरण ब्रह्म पिछाता ॥ ४ ॥

शब्द ६५

जगत में झूठी देखी प्रीत ॥ टेक ॥
अपने ही सुख से सब जग लागे क्या दारा क्या मीत ॥ १ ॥
मेरो मेरो सभी करत हैं हित से बाँधो चीत ॥ २ ॥
अन्तकाल संगी नहीं कोई यह अचरज की रीत ॥ ३ ॥
मन मूरख अज हूँ नहीं समझत सिख दे हारो नीत ॥ ४ ॥
नानक भव जल पार परे जो गावे प्रभु के गीत ॥ ५ ॥

शब्द ६६

एक अनेक व्यापक पूरक जित देखूं तित सोई ॥ टेक ॥
माया चित्र विचित्र विमोहित, विरला बूझत कोई ॥ १ ॥

सब गोविन्द है सब गोविन्द है गोविन्द बिन नहीं कोई ॥ २
सूत एक मणि सहस्त्र जैसे ओत प्रोत प्रभु सोई ॥ ३ ॥
जल तरंग और फेन बुदबुदा जल से भिन्न न होई ॥ ४ ॥
यह प्रपंच पार ब्रह्म की लीला विचरत आन न कोई ॥ ५ ॥
मिथ्या भ्रम और स्वप्न मनोरथ सत्य पदारथ जाना ॥ ६ ॥
आशा मनसा गुरु उपदेशी जागत् ही मन माना ॥ ७ ॥
कहत नामदेव हरिकी रचना देखो हृदय विचारी ॥ ८ ॥
घट घट अन्तर सर्व निरन्तर केवल एक मुरारी ॥ ९ ॥

शब्द ६७

नाथ कैसे छोड़ बैठे क्या मेरी तक़सीर है।
खो बैठूंगी प्राण अपने ऐसी मुझ पै भीड़ है॥

ऐसी थी मैं प्राण प्यारी क़ैद रावण के पड़ी।
राक्षसी डरपा रही हैं हाथ में शमशीर है॥

छुट गई संग की सहेली छूटा सब परिवार है।
छुट गई चरणोंकी भक्ति लौट गई तकदीर है॥

रात दिन तड़फूं पड़ी तुम्हारे दरश बिन हे पती।
तुमरे आये बिन हमारी कौन बन्धावे धीर है॥

मुझको सताते हैं निशाचर अब मेरी सुध लीजिये।
दास तुलसी शरण मरी जनकी मेटो पीर है॥

शब्द ६८

सिया रघुवीर भरोसो ऐसो ॥ टेक ॥
वारि न बोरि सके प्रहलादहि, पावक नाहीं जरोसो।
हिरणाकुश बहु भांति सतायो हठ कर बैर करोसो।
मारयो चाहे,दास नर हरि को आपै दुष्ट मरोसो ॥ २ ॥
मीरा के मारण के कारण पठयो ज़हर खरोसो।
राम नाम अमृत भयो ताको हंस हंस पान करोसो ॥ ३ ॥
द्रपद सुता को चीर दुशासन सभ्य सभा पकरोसो।
ऐंचत ऐंचत भुज बल हारे नेक न अंग उघरो सो ॥ ४ ॥
भारत में भंवरी के अण्डा कोटिन दल विखरोसो।
राम नाम जब पंछिन टेरयो घंटा टूटि परयोसो ॥ ५ ॥
जारयो पुर अंजनी नन्दन देखत पुर सगरोसो।
ताके मध्य विभीषण को गृह राम कृपा उवरोसो ॥ ६ ॥
रावण सभा कठिन प्रण अंगद हठकर हरि सुमरोसो।
मेघनाथ सम कोटिन योधा लागे टारे पग न टरोसो ॥ ७ ॥
तुलसीदास विश्वास राम पद जो नर नारी करोसो।
और प्रभाव कहांलग वरणों जेही यमराज डरोसो ॥ ८ ॥

शब्द ६९

ऊधो करमन की गति न्यारी ॥ टेक ॥
सब नदियां जल भर भर रहियां सागर किस विध खारी।

उज्ज्वल पंख दिये बगुला को कोयल किस गुण कारी ॥ २ ॥
सुन्दर नयन मृगा को दीने बन बन फिरत उजारी ॥ ३ ॥
मूरख मूरख राजे कीने पण्डित फिरें भिखारी ॥ ४ ॥
सूरश्याम मिलवे की आशा छिन छिन बीतत भारी ॥ ५ ॥

शब्द ७०

बन आये की बातरे ऊधो बन आये की बात रे ॥
एक समय हरि हमने देखे मुख धोवत ना हाथरे ॥
अबतो कृष्ण भये ब्रह्मचारी सौसौ बिरियां न्हातरे ॥ १ ॥
एक समय हरि हमने देखे छीन छीन दधि खातरे ।
अबतो कृष्ण भये हैं राजा चढ़े सिंहासन जातरे ॥ २ ॥
कर पै पात पात कर हीपै मांग मांग दधि खातरे ।
जो माधो इस बन नहीं आवें तुम क्यों आवत जातरे ॥ ३ ॥
यही बात उनसे जा कहियो और बातों की बातरे ।
यह बात उन ही को सोहे जाके दो जननी दो तातरे ॥ ४ ॥
ज्यूं मधु कुल बसे काष्ट में वन्धा अम्बुज के पातरे ।
जो गंगा देवन को दुर्लभ जामें श्वान नुहात रे ॥५॥
तेल के संग फुलेल होत है महकत बास सुवास रे ।
मोती बीच सूत का तागा महंगे मोल बिकात रे ॥ ६ ॥
वृंदावन में गऊ चरावत गोकुल ही को जातरे ।
हाथ लकुटिया काँधे कमरिया रज लिपटाये गात रे ॥ ७ ॥
यही वृन्दावन यही बन कुञ्जन यही पलाश के पात रे ।

हाथ ओट हरि हम से खाया दधि माखन और भातरे ॥ ८ ॥
यों मन माधो जी से झगड़ूं दे कुब्जा के लात रे।
॥ सूर श्याम कुब्जा संग विरमें गोपिन संग लजातरे ॥ ९ ॥

शब्द ७ : (अ)

जगदीश्वर तुम्हारा सहारा हमें, यहाँ दीखे न कोई हमारा हमें
गर्भ यातना के संकट से करके कृपा जो उबारा हमें ॥ १ ॥
दाँत नहीं थे जब दूध दियो तब फिर भी कभी न बिसारा हमें ॥
सदा रह्यो साथी घट भीतर पल भर भी करते न न्यारा हमें ॥
जो कुछ सुख तुम देहु दयाकर क्या कोई देगा विचारा हमें ॥
धर्मदास कहे भव वारिध से पार कबीर उतारा हमें ॥

शब्द ७ :

मैं वारी जाऊं सत्गुरु की मेरो कियो भरम सब दूर ॥ टेक ॥
प्यालो प्यायो प्रेम को घोर सजीवन मूर।
चढ़ी खुमारी नाम की होगई चकना चूर ॥ १ ॥
विमल प्रकाश अकाश में लख्यो बिना शशि सूर।
मगन भयो मन गगन में सुन के अनहद तूर ॥ २ ॥
ममता घट समता बढ़ी उर अन्तर भर पूर।
राग द्वेष जग से मिटे अब मन भयो मजूर ॥ ३ ॥
शब्द सुनत यम दूत के मुख में लागी धूर।
आय मिले धर्मदास को सत्गुरु हाल हजूर ॥ ४ ॥

शब्द ७२

क्यों सोया ग़फलत का माता जागरे नर जागरे ।
या जागे कोई योगी भोगी या जागे कोई चोर रे ॥
या जागे कोई सन्त पियारा लागी राम से डोरि रे ।
ऐसी जागनि जाग प्यारे जैसी ध्रुव प्रहलाद रे ॥
ध्रुव को दीनी अटल पदवी दिया प्रहलाद को राज रे ।
हरि सुमिरे सोई हंस कहावे कामी क्रोधी कागरे ॥
तन का चोला भया पुराना लगा दाग़ पर दाग़ रे ।
मन है मुसाफिर तन की सराय बिच तू कीन्हा अनुराग रे ॥
साधु संग सत्गुरु की सेवा पावै अचल सुहाग रे ।
नित्यानन्द भज राम गुमानी जागन पूरन भाग रे ॥

शब्द ७३

चार वर्ण में सोई बड़ा जिन राधा कृष्ण रटा ॥ टेक ॥
काहे को जोड़े माल ख़ज़ाने काहे को चुनावत ऊंची अटा ।
जब यम की तलबी आयेगी छोड़ जाय सब लटा पटा ॥ १ ॥
यह दम हीरालाल अमोलक पल में जाता घटा घटा ।
वहां आया तू कौल करार कर यहाँ फिरता तू नटा नटा ॥ २ ॥
अपने कुटुम्ब को ऐसे देखे पलक उठाये पटा पटा ।
जब हंसा चाल्यो जात है छोड़ जाय तू लटा पटा ॥ ३ ॥
यह संसार मतलब का ग़रज़ी बातें करता झूठ मिठा ।
चन्द्रसखी भज बालकृष्ण छबि कानन कुण्डल मुकुट जड़ा ॥ ४ ॥

शब्द ७४

बतादे सखी कौन गली गये श्याम ॥ टेक ॥
गोकुल ढूंढ वृन्दावन ढूंढा मथुरा में हो गई श्याम ॥ १ ॥
मथुरा ढूंढत रैन विहानी रात कियो विश्राम ॥ २ ॥
भोर भयो जब बन २ ढूंढा पायो कदमन छांम ॥ ३ ॥
कहा कहूं वाके मुख की शोभा कोटि उदय भये भान ॥ ४ ॥
चन्द्र सखी भज बालकृष्ण छबि लाजत कोटि शत काम ॥

शब्द ७५

देश मेरा बांका है भाई जहां हंसा अमर हो जाई ॥ टेक ॥
देश मेरे की अद्भुद लीला वाकी थाह न पाई ।
शेष महेश गणेश थाके हैं शारद मति भरमाई ॥ १ ॥
चांद सूरज अग्नि तारों की ज्योति जहां मुरझाई ।
अर्व खर्व विजली जहाँ चमके तिनकी छवि शरमाई ॥ २ ॥
देश मेरे का कठिन पन्थ है तुमसे चला न जाई ।
सन्त रूप धर के जाना हो नातर काल ले खाई ॥ ३ ॥
पर धन मिट्टी के सम जानो माता नार पराई ।
राग द्वेष की होली फूंको तज दो मान बड़ाई ॥ ४ ॥
सत्गुरु की नित्य शरण गहोरे चरणों मेंचित लाई ।
नाम रूप मिथ्या जग त्यागो तब वहां पहुंचो जाई ॥ ५ ॥
घाटी विकट निकट दरवाज़ा सत्गुरु राह बताई ।
बिन सत्गुरु वाकी राह न पावे लाख करो चतुराई ॥ ६ ॥

गुरु अपने को शीश नवाऊं आतम रूप लखाई।
निर्भ्यानन्द हैं गुरु हमारे संशय दिये मिटाई ॥ ७ ॥

शब्द ७६

जगत में हरि सम मित्र न कोई ॥ टेक ॥
भांति भांति के देत पदारथ कृपा नीर से धोई ॥ १ ॥
जो नर हरि सों करे मित्रता आप हरि सम होई ॥ २ ॥
हरि सुमरण सत्संग जगत में सार पदारथ दोई ॥ ३ ॥
भजो कन्हैयालाल हरि को वृथा जन्म मत खोई ॥ ४ ॥

शब्द ७७

वा घर जय्यो हे नींद जा घर राम नाम नहीं भावे ॥ टेक ॥
बैठ सभा में मिथ्या बोले निन्दा करै पराई।
वह घर हमने तुझे बताया जाय्यो बिना बुलाई ॥ १ ॥
के तू जय्यो राज द्वारे कै रसिया रस भोगी।
हमरा पीछा छोड़ बावरी हम हैं रमते जोगी ॥ २ ॥
ऊंचा मन्दिर धौर सखीरी जहां कामिन चंवर ढुलावें।
हमरे संग क्या लेगी बावरी पत्थर पर दुःख पावें ॥ ३
कहें भरथरी सुनरी निद्रा यहां नहीं तेरा बासा।
हमतो रहते राम भरोसे गुरू मिलन की आशा ॥ ४ ॥

शब्द ७८

राम ज्यूं राखे त्यूं रहिये ॥ टेक ॥
जो प्रभु करे भला कर माने कबहु बुरा न कहिये ॥ १ ॥

हरि होनी अनहोनी भी करदे सो सब सिरपर सहिये ॥ २ ॥
कर कृपा निज नाम जपावे सो अन्तर ले गहिये ॥ ३ ॥
महरदास हरि आज्ञा माने यह सेवक को चाहिये ॥ ४ ॥

शब्द ७९

प्रभु जी भले बुरे हम तेरे ॥ टेक ॥
पेट भरे पर महा आलसी सोवत सांझ सवेरे ॥ १ ॥
तुम समदर्शी अधमउधारन चित्त न धरो अवगुण मेरे ॥ २ ॥
काम क्रोध और ममता तृष्णा रहत सदा नित घेरे ॥ ३ ॥
तुम बिन कौन सहायक मेरो बैरी बहुत घनेरे ॥ ४ ॥
माया बस यह जन्म गंवाया भटकत फिरे बहुतेरे ॥ ५ ॥
गोपीनाथ आशा तज सबकी होऊ श्याम के चेरे ॥ ६ ॥

गजल ८०

श्याम की ऊधो छबि दिल में हमारे भारही ॥ ठेक ॥
मुकुट सिर पर कान में कुण्डल गले बनमाल है।
मुख में लगाई बाँसुरी अब याद हमको आरही ॥ १ ॥
छोड़कर हम को मुरारी बास मथुरा में किया।
एक २ घड़ी हमें अब बरस बरस बिता रही ॥ २ ॥
फिर कभी आवेंगे गोकुल में दया करके हरी।
अंखियाँ हमारी रातदिन दरशन लिये तरसारही ॥ ३ ॥
यह ज्ञान का उपदेश ऊधो और को बतलाइये।
ब्रह्मानन्द माधव की हमें अब प्रेम भक्ति सुहारही ॥ ४ ॥

शब्द ८१

बांस चढ़ी हरषानी नटनियां ॥ टेक ॥

शब्द बास धुनि डोर पकड़कर गगन में चढ़ मगनानी नटनियां
बाजे अनहद ऊपर बाजैं चढ गई अधर ठिकाने नटनियां ॥ २ ॥
सत्य लोक में जाय डंका दीना गुरूको करत सलामी नटनियां ।
पदमदास फिर उलटी चढ़ चरण गुरूके लिपटानी नटनियां ॥ ४

शब्द ८२

कोई पीवो राम रस प्यासा रे ॥ टेक ॥

गगन मण्डल में अमृत बरसे पीलो सांसम सासारे ॥
ऐसा महंगा अभी बिकत है छै रत्तो बारह मासा रे ॥
जो पीवे सो जुग जुग जीवे कबहुं न होत विनाशा रे ॥
इस रस कारण हुए नृप जो ी छोड़े भोग विलासारे ॥
सहज सिंहासन बैठे रहते भस्म लगाय उदासा रे ॥
गोपीचन्द भरथरी रसिया अरु कबीर रहदासारे ॥
गुरु दादूप्रसाद को चुनके पाया सुन्दर दासा रे ॥

शब्द ८३

जिसको तू नर तन मानत यह आप रूप भगवान् है ॥ टेक ॥
अहंकार ने जब से घेरा कहन लगा मेरा और तेरा ।
भूल गया निज रूप अनेरा तू सर्वज्ञ सुजान है ॥ १ ॥
मैं हूं देह देह है मेरी केवल यही भूल है तेरी ।
पांच तत्त्वकी यह तो ढेरी ज्ञान क्यों भयो अज्ञान है ॥ २॥

बुरी भली करनी जब करै ह बन्धन में तभी तो पड़े है।
निष्क्रिय को नहीं कुछ डर है तो हे कर्म की आन है॥
सत् चित् आनन्द भाव संभारो पाँच कोषते हो जा न्यारो।
नाम रूप कछु नांह निहारो यही तो निर्मल ज्ञान है॥ ४

शब्द ८४

सब तज भज हरि नाम पियारे॥ टेक॥
दीन दयालु कृपालु दयानिधि भक्तन के रखवारे॥ १॥
पापी पतित गीध गनका से कोटिन जन निस्तारे॥ २॥
जहां जहां भीड़ पड़ी भक्तन पर तुरत ही आप पधारे॥ ३
रावण कुम्भकरण से योधा महा युद्ध कर मारे॥ ४॥

शब्द ८५

सुरता हे म्हारी धोवनियां म्हारा दाग़ जिगर का धोय॥ टेक
तन कर कूंडी मति मसाला या ही में सांण धरो।
लोभ लकरिया ठोक जराओ कुन्दी तो खूब करो॥ १॥
समता नीर ज्ञान का साबुन सत का मावा दो।
शील शिला परदे फटकारो या विधि साफ करो॥ २॥
खैंच तान कर तह बनालो गुलझिट मत राखो।
जन्म जन्मके दाग़ लगे हैं अबके डालो याने धोय॥ ३॥

शब्द ८६

इतना तो करना स्वामी जब जान तन से निकलें।
गोविन्द नाम कहकर प्राण तनसे निकले॥टेक॥

श्री गंगाजी का तट हो या यमुनाजी का बट हो।
और सांवरा निकट हो फिर प्राण तनसे निकले ॥ १ ॥
श्री वृन्दावन का स्थल हो मेरे मुख में तुलसीदल हो।
विष्णु चरण का जलहो फिर प्राण तनसे निकले ॥ २ ॥
सन्मुख सांवरा खड़ा हो वंशी का सुर भरा हो।
तिरछा चरण धरा हो फिर प्राण तन से निकले ॥ ३ ॥
शिर सोहना मुकुट हो मुखड़े पै काली लट हो।
यही ध्यान मेरे घट हो फिर प्राण तन से निकले ॥ ४ ॥
उस वक्त जल्दी आना ना कौल भूल जाना।
नूपुर की धुनी सुनाना फिर प्राण तन से निकले ॥५॥
मेरे प्राण निकलें सुख से तेरा नाम निकले मुख से।
बच जाऊं घोर दुख से फिर प्राण तन से निकले ॥ ६ ॥
जब कण्ठ प्राण आवे कोइ रोग न सतावे।
तू दर्श यदि दिखावे फिर प्राण तन से निकले ॥ ७ ॥
यह नेक सी अर्ज़ है मानो तो क्या हरज़ है।
कुछ तेरा भी फरज़ है फिर प्राण तन से निकले ॥ ८ ॥

गज़ल ८७

आलम में किस का डर है जिस पर नजर हो तेरी।
बेशक वह बेख़तर है जिस पर मेहर हो तेरी ॥
दुश्मन न कोई उसका होवे तू दोस्त जिसका।
दुनियां ही यार होवे हां जब मदद हो तेरी ॥

दरदो अलम वहाँ के ऐब वो गुनाह जहां के।
कोई न पास आवे जिसको पनाह हो तेरी ॥
राई से कोह कर दे ख़ाली को दम में भरदे ।
थोड़े से तू बहुत दे पर जब रज़ा हो तेरी ॥

शब्द ८८

गुरू के समान नाहीं दूसरा जहान में ॥ टेक ॥
गुरु ब्रह्म रूप जानो शिव का स्वरूप जानो ।
साक्षात विष्णु जानो लिखा है पुराण में ॥ १ ॥
गुरु ज्ञान बतावे गुरु पाप से बचावे।
ब्रह्म से मिलावे गुरु तुर्या पद ध्यान में ॥ २ ॥
यही श्रुति वेद कहता गुरु विन ज्ञान कैसा ।
ज्ञान विना मुक्ति कैसी आवे तेरा ध्यान में ॥ ३ ॥
छल कपट त्याग दीजो गुरु जी की सेवा कीजो।
सांवरा की शरणा लीजो खेलो ना मैदान में ॥ ४ ॥

शब्द ८९

तेरा पिंजरा बना है अमोल निरख पिंजरे ने भाई ॥ टेक ॥
इस पिंजरे में तोता मैना सोऽहं सोऽहं बोलत बैना ।
सुरत निरत को डाट शब्द में चितलाई ॥ १ ॥

पचीं मार पचीसों वश में इन पांचों को करले रस में ।
शून्य शिखर को खोज भरम तेरा मिटजाई ॥ २ ॥
खंब गड़े हैं बड़े रसीले बन्ध मत समझे इनको ढ़ीले ।
लगा पवन की गांठ खम्ब में उलझाई ॥ ३ ॥
जो सत्गुरु की शरणा आवे मगंल मूल परम पद पावे ।
हो तुर्या असवार मिटे आवा जाई ॥ ४ ॥

शब्द ९०

जो कोई चित्त से मोहे ना विसारे मैं ना विसारूं प्रण है यही मेरा ॥ टेकः ॥

धर्म प्रिय हो धर्म बढ़ाऊं सफल कार्य कर अर्थ बताऊं ।
मुक्ति चाहे तो पार लगाऊं पल क्षण मांही नालावों बेरा ॥१॥
रोग हरूं चिन्ता सब टारूं अभय करूं शत्रु को मारूं ।
अचल भक्त जन बेग उबारूं सेवा करूं आप बन चेरा ॥२॥
मेरा नाम भक्त सुखदायक सदा विपत्ति में होत सहायक ।
जो कोई रटे कृष्ण यदुनायक ताके हृदय करत नित डेरा॥३॥

गज़ल ९१

अरे लोगो तुम्हें क्या है या वह जाने या मैं जानूं ॥ टेक ॥
वह दिल माँगे तो हाज़िर है वह सर मांगे तो बेसर हूं ।
जो मुख मोड़ूं तो काफिर हूं या वह जाने या मैं जानूं ॥१॥

वह मेरी बग़ल छुप रहता मैं उसके नाज़ सभी सहता।
वह दो बातें मुझे कहता या वह जाने या मैं जानूं ॥ २॥
वह मेरे खून का प्यासा मैं उसके दर्द का मारा।
दोनों का पन्थ है न्यारा या वह जाने या मैं जानूं ॥ ४॥
मूवा आशिक द्वारे पर अगर वाक़िफ नहीं दिलवर।
अरे मुल्लाँ शिफ़ारा पढ़ या वह जाने या मैं जानूं ॥ ४ ॥

शब्द ६२

मिलना कठिन है कैसे मिलूं पिया संग जाय ॥ टेक ॥
समझ सोच पग धरूं यतन से कर बहु भांति उपाय।
ऊंची सैल गैल रपटीली पाँव नहीं ठहराय ॥ १ ॥
लोक अरु कुल की मर्यादा से बहुतक मन सकुचाय ।
धाय मिलूं पिय से पीहर से तो अनरीत दिखाय ॥ २॥
शून्य शिखर पर पिय को महल है श्वेत ध्वजा फहराय ।
शब्द स्वरूपी पिया बसत है वहां सुरत झकोरा खाय ॥३॥
दूती सुमति आय धर्मिन को दीनों पिय ही मिलाय।
पिय ने पकड़ प्रेम से बैयां लीनी कण्ठ लगाय ॥ ४॥

शब्द ६३

बम बम्भोलेनाथ शिवनाथन के नाथ आज मेरी कामना पूरण करो ॥ टेक ॥

मेरे बाबे की झोली में क्या क्या चीज़ लोंग सुपारी धतूरा का बीज ॥ १ ॥
कोई बजावे शंख घड़ावल कोईब जावे ताल कोई मांगे खड़ा होकर गोदी में का लाल ॥ २ ॥
कोई चढ़ावे बेल पत्र कोई चढ़ावे भगं बैल की सवारी कीनी पारवती के सगं ॥ ३ ॥

शब्द ६४

अनुभव स्वरूप निजरूप लखा जिन ओ३म् सोऽहं रटा २ रे टेक।
अक्षय धन सम्पति मिल जावे तृष्णा कबहूं मन न डुलावे।
कर सुन्तोष बैठ रहो घर में बाहर फिर मत उठा २ रे ॥ १ ॥
शान्त चित्त निर्मल बुद्धि होवे वृथा कल्पना मन की खोवे।
अन्तर बाहर उज्जवल करले मल बाधा को छुटा २ रे ॥ २ ॥
राग द्वेष के फन्द कट जावें चहुं दिशि समता भाव दर्शावें।
निश्चय यही एक मन राखे जगसों दृष्टि हटा हटा रे ॥ ३ ॥
नाम रूप गुण लखे न जावें सत् चित् आनन्द भ्रम नशावें।
माखन माखन खालो प्यारे छोड़ दो सब मठा मठा रे ॥ ४ ॥

ग़ज़ल ६५

बिना दर्शन किये तेरे नहीं दिल को क़रारी है।
कमल ज्यों नीर बिन सूखे पपीहा धुन पुकारी है ॥
बिना जल मीन नहीं जीवे वही अब गत हमारी है।

नहीं है और को इच्छा तेरा ही नाम कारी है ॥
दीजे तत्काल हमें दर्शन यही विनती हमारी है ।
बिना दर्शन तेरे प्रभु जी भई सो गत हमारी है ॥
तड़पता है यह मन पापी नैनों से नीर जारी है ।
न देखूं जब तलक तुझको मुझे जीना भी भारी है ॥
देओ दर्शन हमें स्वामिन् मेरी सुध क्यों विसारी है ।
नहीं हम नाम के भूखे नहीं दौलत ही प्यारी है ॥
करो चरणों के दास अपने निहाने यह बिचारी है ॥

ग़ज़ल ९६

शरण अपनी में रख लीजे दयामय दास हूं तेरा ।
तुम्हें तज कर कहां जाऊं हितू को और है मेरा ।
भटकता हूं मैं मुद्दत से नहीं विश्राम पाता हूं ।
दया की दृष्टि से देखो नहीं तो डूबता बेड़ा ॥
सताया राग द्वेषों का तपाया तीन तापों का ।
दुःखाया जन्म मृत्यु का हुवा तंग हाल है मेरा ॥
दीन दुःख मेटने वाला तुम्हारा नाम सुनकर मैं ।
शरण में आगिरा अबतो भरोसा नाथ है तेरा ॥
क्षमा अपराध कर मेरे फक़त है आश अब तेरी ।
दया बलदेव पर करके बना ले नाथ निज चेरा ॥

शब्द ९७

सप्त सिद्धान्त कहैं तुम सुनलो, एक ओं को करें बयान

हिरण्यगर्भ सिद्धान्त कहैं यों, माता तीनों कहैं बखान ॥
ग्नि वायु सूर्य तीसरा, ऋग्यजु साम ये ब्रह्म पिछान ।
अकार उकार मकार ये अक्षर, नौ प्रतीक ओं भगवान् ॥
द्वितीय कपिल देव यूं कहते सत रज तम गुण तीन प्रधान ।
व्यक्त अव्यक्त ज्ञेय ज्ञाता के यही तीनों हैं सब में ज्ञान ॥
मन बुद्धि अहंकार ये कारण नौ में धरो ओं का ध्यान ।
तीजे मुनि अवान्तर भाषै अग्नि तीन का करो मिलान ॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र ये तीनों हैं सब जग में देव महान ।
धर्म अर्थ और काम प्रयोजन येही ओं के अक्षर मान ॥
सनतकुमार कहैं अब चौथे भूत भविष्यत् ओ वर्त्तमान ।
वही संध्याक्रान्तये संधि लिङ्ग स्त्री क्लीव पुमान ॥
सप्तब्रह्म निष्ठ हृदय को कण्ठ मूर्द्धा तीन स्थान ।

शब्द ६८

दीनबन्धो हम सबों को ज्ञान भिक्षा दीजिये ।
आपके हम पुत्र हैं सब भान्ति रक्षा कीजिये ॥
दो हमें वर भक्ति अपनी और सुन्दर धीरता ।
शक्ति विद्या मानधन यश और सच्ची वीरता ॥
देशसेवी हम सभी हों सत्य ही भाषण करें ।
झूठ छल चोरी जुवा से नित्य हे ईश्वर डरें ॥
अन्त को सब शिशु गणों की आप से विनती यही ।

हो सभी इस योग्य जो शोभित करें भारत मही।
हे प्रभो आनन्ददाता ज्ञान हम को दीजिये।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हम से कीजिये॥
लीजिये हमको शरण में हम सदाचारी बनें।
ब्रह्मचारी धर्म रक्षक वीर व्रतधारी बनें॥
सृष्टिपालक दुष्टघातक भक्त सुखदायक तुम्हीं।
दीनबन्धु करुणसागर और सब लायक़ तुम्हीं॥
प्रह्लाद ध्रुव के सम हमें प्रभु अपनी भक्ती दीजिये।
देश हित तन धन बली करनें को तत्पर कीजिये॥

शब्द ६६

नाथ मेरी भली जो बनी असवारी॥ टेक॥
अपयश ऊंट अकीरति हाथी पाप पालकी न्यारी।
संग असवार कुचील भील के काम कपट दल भारी॥ १॥

काम क्रोध मद लोभ मोह ये हैं सरदार अगाड़ी।
कई ये सहस्त्र पापन के छकड़ा लाद चलेंगे पिछाड़ी॥ २॥
मोसिर छत्र फिरे हंकार को भागी दया विचारी।
नेम धर्म मेरे निकट न आवे तज गये भूमि हज़ारी॥ ३॥

मैं हूं सब पापिन को राजा कैसे आऊं शरण तिहारी।
सूर को स्वामी का बड़ा ही भरोसा तारनहारे मुरारी॥४॥

शब्द १००

मधुकर कृष्ण कठोर भये ॥ टेक ॥
लगे आषाढ़ गगन घन छाये चपला चमकत जोर।
झुमक झुमक बरसन लागे गरजत चारों ओर ।
पपीहा पीउ पीउ नाम लये ॥ १ ॥
सावन मन भावन हम तज कर छाय रहे परदेश।
झूला झूलत नारि सब सहे न जात कलेश ॥
सखी सब गावत गीत नये ॥ २ ॥
भादौं कारी यामिनी लखि डरपत जीउड़ा मोर।
झींगुर झनाकारी करै दादुर कर रहे शोर ॥
सुरत हरि हमरि भूल गये ॥ ३ ॥
कुवार शरद निश जान के खंजन पहुंचे आन।
शीतल शशि लखि चांदनी मारत हरिरिपु बान ॥
गये जब से ना दरस दये ॥ ४ ॥
कातिक व्रत धारे त्रया गावत सब मिल व्रन्द।
हमको गृह भावत नहीं बिन श्री गोकुलचन्द ॥
स्याम मथुरा के बास लये ॥ ५ ॥
अगहन अनदेशो है बड़ो मग हेरत दिन जाय।
भई सौति, अब कूबरी लिये स्याम विरमाय ॥
सकल सुख तीके भवन छये ॥ ६ ॥
पूष मास आयो सखी लग्यो परन तुषार।

कृष्ण मिलन बिन कंप रही हम सब बृज की नार ॥
श्याम सुख कुब्जै जाय दये ॥ ७ ॥
माह मधुसूदन बिना परै नहीं है चैन ।
नींद न आवै सेज पै देते रहत दुःख मैन ॥
जाय चेरी के नाथ भये ॥ ८ ॥
फागुन खेलत फाग सब रही रंग मिल डार ।
हमको लागे तीर सम पिचकारी की धार ॥
स्याम ऐसे में छोड़ गये ॥ ९ ॥
चैत मास ऋतुराज लखि फूलन लगे पलाश ।
जरद जरद द्र मलता लखि उपजत उर में त्रास ॥
बिरहा बिरहिन तन नित नये ॥ १० ॥
लागत ही वैशास्व अब घाम परत अति जोर ।
कैसे शीतल होय उर बिन श्रीनन्द किशोर ॥
सुनत ऊधो के होश गये ॥ ११ ॥
जेठ लपट की झपट से है व्याकुल बृजबाल ।
सूरश्याम राधा नगरी के सुमरत श्री नन्दलाल ॥
चरणों में निशि दिन शीश नये ॥ १२ ॥

शब्द १०१

भजो राधेकृष्णा राधेकृष्ण राधे गोविन्द
केशोजी कल्याण गिरी धरण छबीले लाल

नन्द नन्दन श्री वृन्दावन चन्द ॥ १ ॥
देवकी को छय्या बलभद्र जी को भय्या
जाके मुख देखेते मिटे दुःख द्वन्द ॥ २ ॥
ब्रजपति ब्रजराय सन्तन सदा सहाय ।
मुरलीधरन नैना देखेते आनन्द ॥ ३ ॥
जादौंपति जादौंराज सुरन के सारे काज ।
याहि धुनि गावें स्वामी परमानन्द ॥ ४ ॥

शब्द १०२

भजले रे मन गोपाल गुणा ॥ टेक ॥
अधम तरे अधिकार भजन सूं जोई आये हरि की सरणा ।
अविश्वास तो साखि बताऊं अजामेल गणिका सदना ॥१॥
जो कृपाल तन मन धन दीन्हों नैन नासिका मुख रसना ।
जाको रचत मास दस लागे ताहि न सुमिरो एक छिना ॥२॥
बालापन सब खेत गंवाया तरुन भयो जब रूप घना ।
वृद्ध भयो जब आलस उपज्यो मया मोह भयो मगना ॥ ३ ॥
गज अरु गीदहु तरे भजन सूं कोऊ तरयो नहिं भजन बिना ।
धन भगत पीया पुनि शिवरी मीरां की हूं करो गगना ॥ ४ ॥

शब्द १०३

नातो नाम को मोसूं तनक न तोड्यो जाय ॥ टेक ॥
पाना ज्यूं पीली पड़ी रे लोग कहैं पिंड रोग ।

छाने लांघन मैं कियो रे राम मिलन के जोग ॥ १ ॥
बाबल वैद बुलाइया रे पकड़ दिखाई म्हांरी बांह ।
मूरख वैद मरम नहीं जाने करक कलेजे मांह ॥ २ ॥
जाओ वैद घर आपणे रे म्हाँरो नांम न लेय ।
मैं तो दाझी विरह की रे काहे कूं औषध देय ॥ ३ ॥
माँस गलि गलि छीजियारे करक रह्या गल आहि ।
आँगुलियाँ की मूदड़ी म्हारे आवण लागी बाँहि ॥ ४ ॥
रहु रहु पापी पपिहारा रे पिव को नाम न लेय ।
जे कोई बिरहन साम्हले तो पिव कारण जिव देय ॥ ५ ॥
रिवण मन्दिर रिवण आँगणे रे रिवण २ ठंढी होय ।
घायल ज्यूं घूमूं खड़ी म्हारी विथा न बूझे कोय ॥ ६ ॥
काढ़ि कलेजो मैं धरूं रे कौवा तू ले जाय ।
ज्यां देसां म्हारो पिव बसेरे वे देखत तू खाय ॥ ७ ॥
म्हारे नातो नाम को रे और न नातो कोय ।
मीरां व्याकुल बिरहनी रे पिव दरशन दीजो मोय ॥ ८ ॥

शब्द १०४

तेरा कोई नहीं रोकनहार मगन होय मीरां चली ॥ टेक ॥
लाज सरम कुल की मरजादा सिर से दूर करी ।
मान अपमान दोऊ धर पटके निकली हूं ज्ञान गली ॥ १ ॥
ऊंची अटरिया लाल किवड़िया निरगुन सेज बिछी ।
पंचरंगी झालर सुभ सोहे फूलन फूल कली ॥ २ ॥

बाजू बन्द कडूला सोहै मांग सिंदूर भरी ।
सुमिरन थाल हाथ में लीन्हा सोभी अधिक भली ॥३॥
सेज सुखमणा मीरा सोवे सुभ है आज घरी ।
तुम जाओ राणा घर अपणे मेरी तेरी नाहिं सरी ॥४॥

शब्द १०५

जोगिया तू कब रे मिलेगो आई ॥
तेरी ही कारण जोग लियो है घर घर अलख जगाई ॥ १ ॥
दिवस न भूख रैण नहीं निद्रा तुझ बिन कुछ न सुहाई ॥२॥
मीरा के प्रभु गिरधर नागर मिल कर तपत बुझाई ॥३॥

शब्द १०६

कैसे जीऊं री मेरी माई, हरि बिन कैसे जिऊं री ॥टेक॥
उदक दादुर मीनवत है जल से ही उपजाई ।
पल एक जल कूं मीन बीसरै तलफत मर जाई ॥१॥
पिया बिन पीली भई रे बाला ज्यों काठ घुन खाई ।
औषध मूल न संचरै रे वैदा फिर जाई ॥२॥
उदासी होय बन बन फिरूं रे विथा तन छाई ।
दास मीरां लाल गिरधर मिल्या है सुखदाई ॥३॥

शब्द १०७

बिर यो तो रंग गाढ़ा लगा मेरी माया दूजा नाहीं सुहाय ॥ टेक ॥

पीया प्याला अमर रस का चढ़ गई घूम घुमाय।
यो तो अमल म्हारो कबहु न उतरे कोट करो न उपाय ॥१॥
साँप टिपारो राणाजी भेज्यो द्यो मेड़तणी गल डार।
हंस हंस मीरा कंठ लगायो यो तो म्हारे नौसर हार ॥२॥
विष को प्यालो राणाजी मेल्यो द्यो मेड़तणी ने प्याय।
कर चरणामृत पी गई रे गुण गोविन्द रा गाय ॥३॥
पीया प्याला नाम का रे और न रंग सुहाय।
मीरा कहै प्रभु गिरधर नागर काचो रंग उड़ जाय ॥४॥

शब्द १०८

नैना लोभी रे बहुरि सकै नहीं आय ॥टेक॥
रोम रोम नख सिख सब निरखत ललच रहे ललचाय ॥
मैं ठाढ़ी गृह आपणे रे मोहन निकसे आय।
सारंग ओट तजे कुल अंकुस बदन दिये मुसकाय ॥१॥
लोक कुटम्बी बरज बरज ही बतियां कहत बनाय।
चंचल चपट अटक नहिं मानत पर हथ गये विकाय ॥२॥
भली कहो कोई बुरी कहो मैं सब लई सीस चढ़ाय।
मीरा कहे प्रभु गिरधर के बिन पल भर रह्यो न जाय ॥३॥

शब्द १०९

मेरो मन राम ही राम रटै रे ॥टेक॥
राम नाम जप लीज़े प्राणी, कोटिक पाप कटै रे ॥१॥

जन्म जन्म के खत जू पुराने, नाम ही लेत फटे रे ॥२॥
कनक कटोरे अमृत भरियो, पीवत कौन नटै रे ॥३॥
मीरा कहै प्रभु हरि अविनाशी, तन मन ताहि पटे रे ॥४॥

शब्द ११०

अच्छे मीठे चाख चाख बेर लाई भीलणी ॥टेक॥
ऐसी कहा आचारवती, रूप नहीं एक रती।
नीच कुल ओच्छी जात, अति ही कुचीलणी ॥१॥
झूठे फल लीन्हे राम प्रेम की प्रतीत जाण।
ऊंच नीच जाने नहीं रस की रसीलणी ॥२॥
ऐसी कहा वेद पढ़ी छिन में विमान चढ़ी।
हरि जी सूं बाँध्यो हेत वैकुण्ठ में झूलणी ॥३॥
ऐसी प्रीत करे कोई दास मीरा तरै जोई।
पतित पावान प्रभु गोकुल अहीरणी ॥४॥

शब्द १११

मेरे तो एक राम नाम दूसरा न कोई।
दूसरा न कोई साधो सकल लोक जोई ॥टेक॥
भाई छोड़या बन्धु छोड़या सगा सोई।
साध संग बैठ बैठ लोक लाज खोई ॥१॥
भगत देख राजी हुई जगत देख रोई।
प्रेम तो सोंज सोंज प्रेम बेल बोई ॥२॥

दधि मथ घृत काढ़ लियो, डार दई छोई।
राणा विष को प्यालो भेज्यो पीय मगन होई ॥३॥
अब तो बात फैल पड़ी, जाणे सब कोई।
मीरां राम लगन लगी होनी होय सो होई ॥४॥

शब्द ११२

शिव शिव रटत मन आनन्द ॥टेक॥
जाके सुमरत विघ्न बिनशत, कटत यम को फन्द।
तीन नेत्र विशाल झलकत तिलक माथे चन्द ॥१॥
ओढ़ना बाघम्बरा शिव भणत छबि मकरन्द।
भूत प्रेत विताल जंगम लिये फिरे शिव संग ॥२॥
वृषभ वाहन रुचि धतूरा भोगना विष भंग।
पारवति पति शरण की गति सूर मन आनन्द ॥३॥

रसिया ११३

कृष्ण खड़े आंगन में, कैसे सोय रही वृजनार?
जिस मोहन पर फिरे दिवानी, मेरी सुनी न मन की मानी।
वही आये हैं सो हम जानी, खड़े पुकारें द्वार ॥१॥
सोऽहं सोऽहं धूम मचाई पड़ा गज़ब नहीं देत सुनाई।
श्याम सुन्दर हैं राम दुहाई टेरत भयी बड़ी वार ॥२॥
चाल अनोखी चितवन वाकी रस भरे नैन मनोहर झांकी।

जगमग ज्योत जरे नयनों की खिल रही अजब बहार ॥३॥
सेज बिछी है शून्य अटारी उठ शिंगार कर निर्भयप्यारी ।
परमानन्द हो खोल किवाड़ी क्यों बैठी मन मार ॥४॥

ध्वनि प्रेमानन्द ११४

भजो *राधे कृष्ण राधे कृष्ण राधे गोविन्द ॥
केशोजी कल्याण, गिरधरन छबीले लाल ।
नन्द को नदन श्री वृन्दावन चन्द ॥ १ ॥
देवकी को छैया बलभद्र जी को भैयालाल ।
जाके मुख देखे मिटत दुःख द्वन्द ॥ २ ॥
ब्रजपति ब्रजराम सन्तन सदा सहाय ।
हर हर मुरलीधर, नैना देखेते आनन्द ॥ ३ ॥
जादोपति जादोराज सूरन के सारे काज ।
याही बिधि गावें स्वामी परमानन्द ॥ ४ ॥

शब्द ११५

रे भूले मन वृक्षों का मत लेरे ॥ टेक ॥
काटनिये से बैर नहीं है, सीचनिये से नहीं सनेह रे ॥ १ ॥
जो कोई वाके पत्थर मारे, वाहू को फल दे रे ॥ २ ॥
सीत घाम सब आपही ओटे, औरों को सुख देरे ॥ ३ ॥

*राधे शब्द प्लुत है अर्थात् लम्बी आवाज से बोला जाता है

कहैं कबीर शरण ले गुरुकी, भव सागर तीरण होरे ॥

शब्द ११६

भज मन राम--चरण दिन राती ॥ टेक ॥
रसना कसना भजो तुम हरि पद, सुरमत क्यों अलसाती ॥ १ ॥
जाके कहत दहत दुःख दारुण, सुनि त्रय ताप बुझाती ॥ २ ॥
सुनते श्रवण सुजस रघुवरको सुन जुड़ात हिय छाती ॥ ३ ॥
स्राता सुमति सुशील सो, हरिजन देत सलाह सुहाती ॥ ४ ॥
रामचन्द्र को नाम अमीरस सो रसकाहेन खाती ॥ ५ ॥
संवत सोलह सो इकतीसा, ज्येठ सुदी छठ स्वाती ॥ ६ ॥
तुलसीदास एक विनय लिखत है, प्रथम अरज़ की पाती ॥ ७ ॥

भजन ११७

आये आये विदुर घर पावना जी ॥ टेक ॥
विदुर नहीं घर थी विदुरानी, आवत देखे शारंग पाणी ।
फूलीं अंगन आवे चिन्ता, भोजन कहा जिमावना ॥ १ ॥
केला एक प्रेम से लाई, गिरी गिरी सब देत गिराई ।
छिलका देत श्याम मुख मांहीं, लागे परम सुहावनाजी ॥ २ ॥
इतने मांही विदुर जी आये, खोटे खारे वचन सुनाये ।
छिलका देत श्याम मुख माहीं कहां गमाई भावना जी ॥ ३ ॥
केला विदुर लिये हाथों माहीं गिरीदेत गिरिधर मुख माहीं ।

कहैं कृष्णजी सुनो विदुर जी,सो सवाद नहीं आवनाजी ॥ ४
बासी कूसे रूखे सूखे, हम हैं विदुर जी प्रेम के भूखे।
धन्य २ गोप ब्रज नारी, कृष्ण विदुर घर पावना जी ॥ ५ ॥

ध्वनि प्रेमानन्द ११८

श्री मन्नारायण नारायण नारायण ॥ टेक ॥
जाको नाम लेत अधना से, काम क्रोध भये जारायण।
शिव सनकादिक आदि ब्रह्मादिक सुमर सुमर भये पारायण ॥ १
क्रीट मुकट मकराकृत कुण्डल, शंख चक्र गदा धारायण।
शिवरी के फल रुचि २ पाये, भक्त सुदामा तारायण ॥ ॥ २ ॥
अजामेल सुतहेत पुकारे, नाम लेत भये पारायण।
दुर्योधन घर मेवा त्यागी, साग विदुर घर पारांयण ॥ ३ ॥
जल डूबत गजराज उबारे, चक्र सुदर्शन धारायण।
डूबत से बृज राखलियो है, कर पर गिरवर धारायण ॥ ४ ॥
चार वेद और भगवद्गीता, बालमीक जी की रामायण।
जो नारायण नाम लेत हैं, मात पिता कुल तारायण ॥ ५ ॥
सुआ पढ़ावत गणिका तारी, नाम जपत भई पारायण।
भरी सभा में लज्जा राखी, द्रोपद चीर बढ़ायायण ॥ ६ ॥
पावक से प्रहलाद उबारे नरहर बपु प्रगटायायण।
वृन्दावन में रास रचौ है, गोपिन संग नृतायायण ॥ ७॥
जहां जहां भार होत भूमी पर, तहां २ लेत अवतारायण।

स्थावर जंगम सबहीं, मोहे मुरलीनाद सुनायायण।
प्रेम समाज सकल मिल बैठो, हरी क चरणा चित धारायण ॥८
माधोदास आस चरणन की, भवसागर भये पारायण ॥ श्रीम० ॥

कवित्त १

दीन मलीन अधीन है अंग, विहंग परयो क्षित खिन्न दुखारी।
राघव दीन दयालु कृपालु को, देख दुखी करुणा भई भारी ॥
गीध की गोद में राखि कृपानिधि, नैन सरोजन में भरिवारी।
बार ही बार सुधारत पंख, जटायु की धूरि जटान सूं झारी ॥

कवित्त २

ऐसे विहाल विवायन सों भये, कण्टक जाल लगे पुनि जोये।
हाय महा दुःख पायो सखा, तुम आये इतै न कितै दिन खोये ॥
देखि सुदामा की दीन दशा, करुणा करिके करुणानिधि रोये।
पानी परात को हाथ छुयो नहीं, नयनन के जल सों पग धोये ॥

कवित्त ३

मानस हौं तो वही रस खान वसों, ब्रज गोकुल गांवके ग्वारन।
जो पशु हौं तो कहा वश मेरो, चरौं नित नन्दकी धेनु मझारन ॥
पावन हौं तो वही गिरि कों धरयो, कर छत्र पुरन्दर धारन।
जो खगहौं तो वसेरो करो मिल, कालिन्दी कूल कदम्बकीडारन

कवित्त ४

गऊ के प्रताप स्वर्गलोक को निवास मिले,
गऊ के प्रताप यमराज ना छवैय्या है।
गऊ के प्रताप भवसागर से पार होत,
गऊ के प्रताप खात दूध और मलैय्या है॥
गऊ के प्रताप हाल मुक्ति तेरी होत लाल,
गऊ के प्रताप मिले नन्द को कन्हैया है।
कामधेनु मैया दूधकी दिवैया जरा दयाकरो भैया,
यह आखिर में गैया है॥
छोटी सी बछिया पार के परवस्तकरी,
तीन वर्ष ताईं अपने हाथ तैं चराई है।
चौथा वर्ष लागो जब ग्याभन की आशा भई,
नौवें महीने पीछे घर ही में ब्याई है॥
दूध दही घृत छाछ किये तेरे चारों स्वाद,
खोवा और रवड़ी खाई दूध की मलाई है।
एरे अन्याई कहा कुमति कमाई,,
कहाँ ले चलो कसाई तोहे शरम न आई है॥

सवैया ५

पग नूपुर पहुंची करंक जनी, अरु मंजु बनी मणिमाल हिये।
नवनीत कलेवर पीत झगा, झलके पुल के नृप गोद लिये॥

अरविन्दु सो आनन रूप मरन्द, आनन्दित लोचन भृंग पिये।
मन में न बसो अस बालक जो, तुलसी जगमें फल कौन जिये॥

कवित्त ६

शेष महेश गणेश दिनेश सुरेश हुं, जाहे निरन्तर ध्यावें।
जाहे अखन्ड अनादि अनन्त, अछेद्य अभेद्य सुभेद्य बतावें॥
नारद से शुक न्यास रटैं, पचि हारे तेहू पुनि पार न पावें।
ताहे को अहीरकी छोकरियां, छछिया भर छाछपै नाच नचावें॥

दोहे

सहजो गुरु प्रसन्न हों, मूंद लिये दो नैन।
फिर मोसूं ऐसे कह्यो, समझ लेऊ यह सैन॥१॥
चींटी जहां न चढ़ सक, सरसों ना ठैराय।
सहजो को वा देश में, सत्गुरु दई बसाय॥२॥
प्रेम बिना धीरज नहीं, विरह विना वैराग।
सत्गुरु बिना मिटे नहीं, मन मनसा का राग॥३॥
नैनों की कर कोठरी, पुतली पलंग बिछाय।
पलकों की चिक डालके, पिया को लिया रिझाय॥४॥
कथनी के सूरा घने, थोथे बान्धे तीर।
प्रेम चोट जिनके लगै, तिनके विकल शरीर॥५॥
प्रीति बहुत संसार में, नाना विधि की सोय।

उत्तम प्रीत सो जानिये, जो सतगुरु से होय ॥६॥
सुरता मांहीं जप करे, तन सूं, न्यारे जौन।
मिले सच्चिदानन्द में, गहे रहे जो मौन ॥७॥
हम तुम्हारो सुमरिन करैं, तुम चितवत मोहि नाहिं।
सुमिरन मनकी प्रीति है, सो मन तुमही माहिं ॥८॥
दया नम्रता दीनता, क्षमा शील सन्तोष।
इनको ले सुमिरन करै, निश्चय पावे मोक्ष ॥९॥
दादू नीका नाम है, आप कहै समझाय।
और आरम्भ सो छोड़कर, हरि जी से चित लाय ॥१०
आयो प्रभु शरणागति कृपासिन्धु दयाल।
एक अक्षर हर मन बसे नानक होत निहाल ॥ ११ ॥
तुलसी विलम न कीजिये भजिये राम सुजान।
जगत मज़ूरी देत है क्यों राखे भगवान् ॥ १२ ॥
बेर २ नहीं पाइये सुन्दर मनुष देह।
राम भजन सेवा सुकृत ये सौदा कर लेय ॥ १३ ॥
कबीर सोई मुख धन्य है जिहि मुख निकसे राम।
देही किस की बापुरी हो पवित्र है ग्राम ॥ १४ ॥
कलियुग सम युग आन नहीं जो नर करहिं विश्वास।
गाई राम गुण गण विमल भव तर विना प्रयास ॥ १५ ॥
बिन विश्वास भकित नहीं तेहि विन द्रवहिं न राम।
राम कृपा विन स्वप्नहुं मन न लहै विश्राम ॥ १६ ॥
जासु नाम भव भेषज हरण ताप त्रय शूल।

सो कृपाल मोहिं तोहिं पर सदा रहहिं अनुकूल ॥ १७ ॥
सहजो भज हरि नाम को तजो जगत सूं नेह।
अपना कोई है नहीं अपनी सगी न देह ॥ १८ ॥
जामें जाकी प्रीति हो रटिये बारम्बार।
सब देवन का नाम बल धरे शेष भू भार ॥ १९ ॥
अजामेल धोखे लियो जाने सब संसार।
बालमीक भये ब्रह्म सम उलटो नाम विचार ॥ २० ॥
परमानन्द स्वरूप तू नहीं तो में दुःख लेश।
अज अविनाशी ब्रह्म चित्त क्यों मानें हिय क्लेश ॥ २१ ॥
आप भुलानो आप में बनयो आप ही आप।
जाको तू ढूंढत फिरे सो तू आप ही आप ॥ २२ ॥
राज द्वेष मनके धरम तू तो मन नहीं होय।
निर्वि कल्प व्यापक अमल सुख स्वरूप तू सोय ॥ २३ ॥
जैसे सांचे में पर्यो होत कनक बहु अंग।
नानावत् यों ब्रह्म में लय उपाधि को संग ॥ २४ ॥
ज्यों तिल मांही तेल है ज्यों चकमक में आग।
तेरा प्रीतम तुझ में जाग सके तो जाग ॥ २५ ॥
भेद ज्ञान तौलो भलो जौलों मुक्ति न होय।
परम जात पर घर भई तब विकल्प नहिं होय ॥ २६ ॥
तू है सो परमात्मा मैं हूं ब्रह्म स्वरूप।
यही आत्मा ब्रह्म है जीव है ब्रह्म स्वरूप ॥ २७ ॥
पिञ्जर प्रेम प्रकाशिया जागी ज्योति अनन्त।

संशय छूटा भय मिटा मिला पियारा कन्त ॥ २८ ॥
सत् चित् आनन्द एक तू ब्रह्म अजन्य असंग।
विभु जेतन माया करै जग को उत्पत्ति भंग ॥ २९ ॥
सब ही के भीतर बसे सब का जानन हार।
वाही ते प्रगट भई नाना वस्तु अपार ॥ ३० ॥
देह मरे तू है अमर पार ब्रह्म है सोय।
अज्ञानी भटकत फिरे लखे सो ज्ञानी होय ॥ ३१ ॥
देह नहीं तू ब्रह्म हैं अविनाशी निर्वान।
नित न्यारो तू देह से देह कर्म सब जान ॥ ३२ ॥
डोलन बोलन सेा बनो भक्षण करन अहार।
दुःख सुख मैथुन रोग सब गर्मी शीत निहार ॥ ३३ ॥
जाति वर्ण कुल देहकी सूरति मूरति नाम।
उपजै विनशै देह सो पांच तत्व को ग्राम ॥ ३४ ॥
पावक पानी वायु है धरती अरु अकाश।
पांच तत्त्वके कोटमें आय कियो तैं वास ॥ ३५ ॥
निराकार निर्लिप्त तू देह जान आकार।
अपन देही मान मत यही ज्ञान तत सार ॥ ३६ ॥
गलै कटै काया यही विनै मिटै फिर होय।
जीव अविनाशी नित्य है जाने विरला कोय ॥ ३७ ॥
चेतन ज्यों की त्यों सदा, सदा अकर्ता जोय।
सब कर्मन सेा रहित है आतम ऐसो होय ॥ ३८ ॥
काहु ते उपज्यो नहीं वाते भयो न कोय।

वह न मरै मारै नहीं राम कहावै सोय ॥ ३६ ॥
सत् चेतन आनन्द है आदि अन्त मध्य हीन ।
आदि अन्त अकार को सो तू झूठी चीन ॥ ४० ॥
इन्द्रिय जान सकै नहीं मन बुद्धी लहे न ताय ।
ज्ञान दृष्टि पहिचानिये वासों वाको पाय ॥ ४१ ॥
सब में देखे आप कूं सब कूं अपने माँही ।
पावे जीवन मुक्त को या में संशय नाहिं ॥ ४२ ॥
जल थल पावक राम है राम रमो सब माहिं ।
हरि सबमें सब राममें और दूसरो नाहिं ॥ ४३ ॥
ऊंच नीच निर्गुण गुणी रंक नाथ अरु भूप ।
हूँ घट वढ़ कासों कहूँ सब आनन्द स्वरूप ॥ ४४ ॥
शस्त्र छेद सके नहीं पावक सके न जारि ।
मरै मिटै सो तू नहीं गुरु गम भेद निहारि ॥ ४५ ॥
नहीं कारण कार्य कछु नहीं काल नहीं देश ।
शिव स्वरूप पूरण अचल सजाति विजाति न लेश ॥
अज्ञ तज्ञ नहीं शुभाशुभ नहीं ईश्वर नहीं जीव ।
सत्य झूठ मो में नहीं अमल समल त्रिय पीव ॥ ४७ ॥
जैसे दिनकर के उदय दीपक द्युति दुरि जात ।
तैसे ब्रह्मानन्द में आनन्द सबै विलास ॥ ४८ ॥
क्षधा पिपासा हर्ष पुनि शोक जन्म अरु अन्त ।
ये षट उरमी धरम धन आतम रहित अनन्त ॥ ४९ ॥
बसन भयो ता सूत में सूतन खिसन मंझार ।

आपस में फूतरी सवै करत परस्पर रार ॥ ५० ॥
ज्ञानी करे अनेक कर्म विधिवत जय व्यवहार।
लिये न धूम आकाश ज्यों जान्यो जगत असार ॥ ५१ ॥
जाग्रत स्वप्न जहां नहीं जहां सुषुप्ति मन लीन।
मैं तू तहां न सम्भवे आतम निश्चय कीन ॥ ५२ ॥
जाग्रत माहिं सुषुप्ति मतवारे की वेल।
करे चेष्टा बाल ज्यों आत्म सुख रहो भेल ॥ ५३ ॥
जैसे भूजे अन्त में उद्भवता भई छीन।
तैसे आतम बान की भई जगत मति लीन ॥ ५४ ॥
जो ताकी पूजा करत सञ्चित सुकृत सुलेत।
दोष दृष्टि तिहीं जो लखे ताहि पाप फल देत ॥ २५ ॥
हेतु मोक्ष को ज्ञान इक नहीं कर्म नहीं ध्यान।
रज्जू सर्प तब हीं नशै होय रज्जू को ज्ञान ॥ ५६ ॥
जगत खेदि में परौ जिन केवल दुख ता माहीं।
सत्य सत्य पुनि सत्य कहूँ सुख स्वप्नेहू नाहीं ॥ ५७ ॥
सहजो भज हरि नाम को तजो जगतसूं नेह।
अपना कोई है नहीं अपनी सगी न देह ॥ ५८ ॥
यही कहैं गुरु देव जी यही पुकारें सन्त।
सहजो तज या जगत को तोहि तजैंगे अन्त ॥ ५९ ॥
जब लग चावल धान में तब लग उपजे आय।
जग छिलके को तज निकस मुक्त रूप होजाय ॥ ६० ॥
कुटुम्ब संघाती बीच में आदि अन्त नहीं होय।

बीच मिले बीच ही गये सहजो संग न कोय ॥ ६१ ॥
सहजो स्वारथ सब लगे दारा सुत और वीर ।
जीवत जोतै बैल ज्यों मुये बटावें सीर ॥ ६२ ॥
सहजो जीवत सब सगै मुये निकट नहीं जायं ।
रोवें स्वारथ आपने स्वपने देख डरायं ॥ ६३ ॥
स्वाँस ख़जानो जात है ताकी सुधी नाहीं ।
सहजो ख़रचो कहा रहे कर हिसाब घर माहीं ॥६४॥
झुर झुर के पिंजरा भये रोय गमाये नैन ।
मर गये सो नाहीं मिलै सहजो सुनै न वैन ॥ ६५ ॥
जो रोवे सो बाहुरे तो रोवे दिन रात ।
तन छीजे वह ना मिले सहजो कूड़ी बात ॥ ६६ ॥

प्रार्थना ११६

ईश्वर तू है सबका स्वामी, क्षमा सिन्धु उर अन्तरयामी ।
महिमा तेरी अपरम्पार, तुझ से गये वेद भी हार ॥
तूने सारा जगत बनाया अनुपम दृश्य हमें दिखलाया ।
सूरज तारे चांद बनाये जलथल अनल पवन प्रगटाये ॥
न्यायी सत्य सिन्धु सुख खान करुणानिधि तूहै बलवान ।
दानी ज्ञानी घट घट वासी, तू है निर्विकार अविनाशी ॥
जीना मरना तेरे हाथ अधः पतन उन्नति तव साथ ।
यश अपयश का तू ही दाता, रूप न तेरा जाना जाता ॥
चींटी से हाथी तक सारे जितने जीव जन्तु बेचारे ।

देकर सबको दाना पानी रखता तू उनपर निगरानी ॥
राई को पर्वत कर देता, पर्वत राई कर धर देता ।
नगरों को तू निर्जन करता, वन में नगरी सिरजन करता ॥
ब्रह्मादिक तव ध्यान लगाते, नारदादि मुनिवर गुणगाते ।
गाते गाते वे थक जाते, तो भी पार न तेरा पाते ॥
हे ईश्वर हे जगदाधार महिमा तेरी अपरम्पार ।
हमारी रख लीजे प्रभू लाज, विनय यही है करते आज ॥
हे प्रभु रक्षा करो हमारी हम आये हैं शरण तुम्हारी ।
दिन भर के अपराध हमारे क्षमा करो करुणानिधी सारे ॥

शब्द १२०

दोहा—धजा फड़के सुन्न में, बाजे अनहद तूर ।
तकिया है मैदान में, पहुंचेगा कोई शूर ॥

गगन मण्डल में जो जन जाकर सुने बेहद अनहद बानी ।
सातों रंग निरखता यहां पर हो जावे पूरण ज्ञानी ॥ टेक ॥
श्याम पुतलिया बदल आंख की रूप रंग देखो सारे ।
सप्त ऋषियों ने सात घाट पर भिन्न २ आसन मारे ॥
जिस में थाना सहस्र कमल का तीन लोक तहाँ विस्तारे ।
जनिता सविता देव सबन के इध्म रूप सातों धारे ॥
चूं चूं चैंकुला झाल समध की घंटा शंख बजैं न्यारे ।
धूम निहार गगन में धसि चल ज्योति जरैं नौलख तारे ॥

पांच कमल के बीच कुण्डिलिनी सहज सहज ही फुंकारे।
मेरु दण्ड से सीधा होकर तोड़ दिये नभ के तारे॥
तीन लोक की रचना यहां से भई सुरति यहां दीवानी।
सातों रंग निरखता० ॥ १ ॥

दर्शन यहां तिरलोक पति के पाओ मन में हर्षाओ।
सूची अग्र छिद्र में होकर बंक नाल में घुस जाओ॥
तिरछा मारग बंक नाल का बिन सत्गुरु कछु ना पाओ।
ऊंचा नीचा ऊंचा होकर त्रय मण्डल पर चढ़ जाओ॥
प्रत्याहार धारणा धारो सिमट बीच सुख मन पाओ।
पी पी पपीहा ऊपर बोल्यो कूर्म बन कर छुप जाओ॥

और मरे सब जग का मरना तुम जीते जी मर जावो।
भृंगी गुरु का शब्द सुनो तुम चरण गुरु के चित लावो॥
तन मन सौंपो अपना उनको हो जावो सर्वस्व दानी।
सातों रंग निरखता० ॥ २ ॥

यह ब्रह्माण्ड फोड़ अण्डे से त्रिकुटी का मण्डल साजा।
योजन लक्ष लक्ष का घेरा सरे जीव का सब काजा॥
हास्य विलास यहां पर अद्भुत ओ३म् ओ३म् हूहू बाजा।
रस का उठे सरूर यहां पर अनहद का बादल गाजा॥
सहस्र भानु की ज्योति जगे यहां मदन देखकर ही लाजा।
ज्ञान विज्ञान हुए यहां से जब मोह जाल टूटा तागा॥

गंगा यमुना और सरस्वती इनके भीतर तू आजा।
अमृत रस में न्हाकर यहां पर विश्वनाथ दर्शन पाजा॥
योजन कोटि सुरत फिर जाकर दशों शून्य में मगनानी।
सातों रंग निरखता० ॥ ३ ॥

द्वादश गुण प्रकाश यहां का त्रिकुटी से शून्य में आई।
रूपवन्त देवों से मिलकर सिंधु सरोवर जा न्हाई॥
महा शून्य की छवि को कोई कहो कैसे सके गाई।
मान सरोवर अमृत धारा आनन्द की नदियां पाई॥
सारंगी सितार बजैं हैं बाजे श्रुति शब्द में ठहराई।
वसु मरुत वहां वास करें हैं कहा कहूं सुन्दरताई॥
अग्नि चन्द्र समान मुखों से मंद मंद ही मुसकाई।
आयु षोडश वर्ष सवन की ऐसी ही अबला पाई॥
सूर्य कान्त की भूमि बनी वहाँ अमृत रस बरसे पानी।
सातों रंग निरखता० ॥ ४ ॥

रिम झिम रिम झिम ज्योति झलके उठे प्रेम की लहर घनी।
बाग़ बगीचे अमर फलों के लालों की वहां सड़क बनी॥
अमी रसोवर बाग़ बाग़ में तट इन का पारस की मणी।
कैसे शोभा कहें यहां की सब कुछ जाने आप धनी
स्वयं प्रकाश रूप को लेकर सुरती फिर आगे को चली।
योजन अरब गई ऊपर को आगे मिल गई प्रेम गली
दशों दिशा में घोर अन्धेरा मगन भई नहीं छली बली।

योजन खरब गई नीचे को यहां से देखी सैर भली ॥
इस पद में दस नील अन्धेरा यहां से सुरती उलटानी।
सातों रंग निरखता० ॥ ५ ॥

योजन खरब गई नीचे को थाह वहां की नहीं पाई।
धर सत्गुरु का ध्यान सुरतिया उलट गगन पर चढ़ि आई ॥
महा शून्य से आगे आकर सिताऽसिता नदियां छाई।
मण्डल चारि पुरुष दर देखा भंवर गुफा झूली जाई ॥
एक हिंडोला अद्भुत यहां पर झूल रहे मुनिवर राई।
इड़ा पिंगला यहां पर अद्भुत सुषमन की पलटी लाई ॥
कुंडली लंगर जब खींचा पींग गगन झोका खाई।
परा पश्यति और मध्यमा सखियों ने वाणी गाई ॥
अनहद घोर घटा बिन बरसे बंसी मधुरी मन मानी।
सातें रंग निरखता० ॥ ६ ॥

गोपी मधुरी वाणी गावें बंसी बजावें नन्दकुमार।
एक एक गोपी संग मिलकर सोऽहं सोऽहं रहे उचार ॥
हियरा से हियरा मिलि भेटे आनन्द को करें सुमार।
और देव की गम नहीं यहां पर महादेव लई मन में धार ॥
गोपी बन कर मिले गले से चरणों से गलबैयां डार।
एक हो गये स्वयं रूप में नयनों से नयनों की धार ॥
गंगा यमुना अचल होगई ऐसा अद्भुत किया विहार।

रुद्र साध्य मुनि एक होगये ताड़ी लागी अगम अपार ॥
नाका टूटा सत्यलोक का उड़ गये हंसा सैलानी ।
सातों रंग निरखता० ॥ ७ ॥

ज्योति हंस यहां बास करें हैं सूक्ष्म चैतन्य हो दर्शाया ।
जड़ स्थल नहीं है वहां पर ना यहां पर काया माया ॥
प्रेम दिवानी भई यहाँ पर सत्य सत्य आपा पाया ।
हक्क हक्क धुनि सुनि के बीन की फिर आपे में मगनाया ॥
रूप स्वरूपा नदियां यहां पर सोना रूपा लं छाया ।
बन उपवन हैं यहां पै अद्भुत कोटि चार उनकी छाया ।
कोटिन सूर्य चांद समाना पहुप वृक्ष पर लगि आया ।
परम हंस यहां बास करें हैं एक भुशुण्ड काग पाया ॥
रस बस के सीकारे यहां पर हंस करें मधुरी बानी ।
सातों रंग निरखता ॥ ८ ॥

सत्य पुरुष का दर्शन किया क्या बरणों सुन्दरताई ।
कोटिन सूर्य चांद देख लो एक रोम से शरमाई ॥
पद्म त्रय लोक बराबर उनकी बिछी सेज सुख की पाई ।
जाकर सोई पिया संग अपने सुध बुध अपनी बिसराई ॥
सन्त कहैं अब अलख लोक की महिमा और उत्तम ताई ।
अरबन खरबन ज्योति चमकें कोटि शंख जो मलूकाई ॥
अगम लोक की गम नहीं मुझ को गूंगे ने मिसुरी खाई ।

परमानन्द गुरू चरणों पर कोट कोट ही बल जाई ॥
गुरू मिला आपा जब मेटा श्रुति शब्द मगनानी ।
सातों रंग निरखता ॥ ६ ॥

प्रार्थना १२१

इतना तो करना स्वामी जब प्राण तन से निकले ।
श्रीराम नाम लेकर मोरे प्राण तन से निकले ॥
सरयू नदी का चहिये सरसब्ज वो किनारा ।
लहरें होय झलमलाती बहती हो ठंडी धारा ॥
एकान्त घाट सुन्दर तिस पर कुशा बिछाऊं ।
फिर न्हाके ठंडे जल से आसन मैं जमाऊं ॥
खिच खिच के नब्ज़ मेरी ऊपर को चढ़ती जावे ।
सुमरण में जीव मेरा हरगिज़ न पेच खावे ॥
मरण के वक्त भगवत ज्यादा न तिलामलाऊं ।
झांकी मुझे दिखाना जो अब तुम्हें बताऊं ॥
तर्कस बंधा हो पाछे कांधे धनुष हो लटका ।
कसकर बंधा हो तेरी नाजुक कमर पै पटका ॥
होठों में मुसुकराहट सिर पै मुकुट बंधा हो ।
हीरों में वह जड़ा हा तारों से वह मंढा हो ॥
गर्दन यह कट के मेरी तेरे चरण में पड़ी हो ।
आंखें खुली हों मेरी तेरी आँख से लड़ी हो ॥
इस नापाक मेरे तन को प्रभु हाथ न लगाना ।

चरणों की ठोकरों से सरयू में फेंक जाना ॥
सरयू नदी की मछली भी इस तन को नोच खावे ।
दर्शन की आरजू है रघुवर की जै मनावे ॥

शब्द १२२

सांवरिया गिरधारी मयि को चाकर राखो जी ॥ टेक ॥

नौकर रहसां चाकर रहसां नित उठ दर्शन पावां ।
बृन्दावन की कुंज गली में गोविन्द लीला गावां ॥ १ ॥
नौकरी में दरशन पांवा सुमरन पांवा खरचा ॥
भाव भगत चंगेरी पांवा तीन बात शमशेरी ॥ २ ॥
ऊंचे २ महल चिनावा बीच रखावां वारी ।
सांवरिया के दरशन पावां लकुट कमरिया कारी ।
जोग करन को जोगी आये तप करने सन्यासी ।
नाम जपन को साधु आये वृन्दावन के बासी ॥
मीरा के प्रभु गिरधारी नागर ऐसो गहर गंभीर ।
ग्वालनी को दरशन दीजो तट जमना के तीर ॥

—:०:—

भगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा।

यह आश्रम रेवाड़ी जंकशन से पश्चिम दिशा में लगभग एक कोस के अन्तर पर जंगल में अति पवित्र भूमि में बना है। जल की सुविधा के लिये तीन कूप और एक तालाब है। तालाब में कुछ पक्के घाट बनाये गये हैं। १०० बीघा भूमि में उपयोगी वृक्ष लगा कर उपवन बनाया गया है। आश्रम से लगी हुई ५०० बीघा भूमि गौओं के चरने के लिये श्री० लेफ्टीनेन्ट रायबहादुर राव बलवीरसिंह जी ने आश्रम को प्रदान की है, जिसमें गौ, मृग आदि स्वच्छन्द विचरते हैं।

इस आश्रम में एक ब्रह्मचर्याश्रम, साधारण पाठशाला, कन्यापाठशाला व अछूत पाठशाला और अतिथियों व सत्संगियों के ठहरने का स्थान व पुस्तकालय है।

ब्रह्मचर्याश्रम

इस समय आश्रम में २५ ब्रह्मचारी हैं। यह प्राचीन ऋषियों की भांति गुरुजनों की सेवा व स्वावलम्बन का जीवन व्यतीत करते हुए विद्योपार्जन करते हैं इनका भोजन व रहन सहन इतना सादा है कि एक ब्रह्मचारी का समस्त खर्च ५) मासिक है। स्वावलम्बी इतने हैं कि इन्होंने एक ६५ फीट गहरा कूप

स्वयं ही खोद लिया है। संस्कृत, देवनागरी, इतिहास, अंग्रेजी इत्यादि सब प्रकार की शिक्षा दी जाती है। व्याख्यान देना भी सिखाया जाता है।

कन्यापाठशाला—इनका जीवन भी बहुत सादा व तप का बनाया जाता है। संस्कृत, देवनागरी, गणित की शिक्षा इनको दी जाती है। रामायण व गीता इनके मुख्य ग्रन्थ हैं।

अछूत पाठशाला व साधारण पाठशाला में निकटवर्ती ग्रामों के बालक पढ़ने आते हैं। अछूतों को आश्रम में रखने का विचार हो रहा है। पुस्तकालय आरम्भिक अवस्था में है। धार्मिक ग्रन्थों का साधारण संग्रह हुआ है, हां एकान्त शाँत स्थानके कारण यह छोटा पुस्तकालय भी बड़ाउ पयोगी है।

रामपुरा आश्रम की भाँति दादरी, गढ़ीबोलनी, जोड़िया, खेटांवास, निखरी, नूरगढ़, खोयरी, पालम, दादरी, भटिन्डा आदि अन्य स्थानों में भी इसी प्रकार के आश्रम खोले गये हैं। इन आश्रमों के द्वारा विना मूल्य शिक्षा, सुख, शान्ति, प्रेम, निष्काम सेवा व भगवान की भक्ति का प्रचार करना एक मात्र उद्देश है—

———

उद्देश्य ।

१—श्री भगवान की भक्ति का प्रचार करना ।

२—गौरक्षण और उसके लिये गोचर भूमि छुड़वाना ।

३—जंगलों में वृक्ष लगवाना और बीच में जलाशय बनवाना ।

४—शिक्षा का प्रचार करना (जिसमें मनुष्यमात्र विद्यालाभ कर सकें) और प्राचीन प्रथा का फिर प्रचलित करना ।

५—बीमारियों के अवसर पर दवाई बांटना ।

६—आस पास के ग्रामोंमें परस्पर के झगड़े और वैमनस्य मिटा कर शान्ति और प्रेम बढ़ाना ।

७-सब संस्थाओंमें भगवद्भक्ति और धर्मका भाव जागृत करना ।

८—राजा और प्रजा सब ही का हित चिन्तन करना ।

यह आश्रम नियमानुसार एक कमेटी की संरक्षता में है आश्रम से सत्यशब्द-संग्रह, सारसंग्रह और भक्तियोग-संग्रह महसूल डाक के टिकट भेजने पर मुफ्त भेजी जाती है ।

नोट- आश्रम से "ज्ञानयोग भक्तिमार्ग" नाम का मासिक पत्र हिन्दी भाषा में प्रकाशित करने का विचार है यदि भक्तजन यत्न करके ५०० ग्राहकों के नाम भेज दें तो पत्र शीघ्र जारी कर दिया जावे

(५) ५०० पुस्तकें श्री० लाला श्रीरामजी मन्त्री "दिल्ली काटन मिल्ज़" दिल्ली ने छपवाईं।

नोट—बैरंग पुस्तकें भेजने का नियम नहीं है।

पता—

श्रीभगवद्भक्ति आश्रम रामपुरा,

पोस्ट रेवाड़ी (दिल्ली)